ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 21 जुलाई 2013

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 21 जुलाई, 2013 से 27 जुलाई 2013

आ. शु–13/14 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 65, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर में हुई उद्योगपतियों तथा शिक्षा-शास्त्रियों की संगोष्ठी

श्री एस.पी. लोहिया बने 'इण्टर एकेडेमिया इण्डस्ट्री सिनरजी हब' के अध्यक्ष

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय, जालन्धर में अकादमिक सत्र शुरु होने से ठीक पहले विद्वानों और उद्योगपतियों को संयुक्त मंच प्रदान करते हुए शिक्षा को शोधपर, रोज़गारोन्मुखी तथा मानवीय मूल्यों के प्रचार –प्रसार का माध्यम बनाने की दिशा में एक 'इण्टर एकेडेमिया इण्डस्ट्री सिनरजी हब' की स्थापना की गई। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री पूनम सूरी ने 12 जुलाई, 2013 को विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित एक समारोह में इसकी विधिवत् घोषणा की। समारोह में डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के पदाधिकारियों, अधिकारियों, विश्वविद्यालय की गवर्निंग बॉडी के सदस्यों के अतिरिक्त पंजाब के जाने –माने उद्योगपति, प्राचार्य तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

विश्वभर के उद्योगपतियों की शीर्षस्थ शृंखला में अपना नाम दर्ज करने वाले भारतीय मूल के इंडोनेशियाई नागरिक श्री एस.पी. लोहिया इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। संसार के 20 देशों में 43 उद्योगों के स्वामी तथा गिने–चुने समृद्ध व्यक्तियों में एक ,परंतु अत्यंत विनम्र और स्नेहिल स्वभाव वाले श्री लोहिया ने कृतज्ञतापूर्ण शब्दों में 'सिनरजी हब' का अध्यक्ष बनना स्वीकार किया। अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने शिक्षा–क्षेत्र तथा औद्योगिक क्षेत्र के पारस्परिक तालमेल की आवश्यकता पर बल देते हुए विश्वविद्यालय को इस पहल पर हार्दिक बधई दी और कहा कि अच्छी शिक्षा के साथ–साथ रोज़गार के लिए ज़रूरी ज्ञान तथा क्रियात्मक अनुभव की भी उतनी ही आवश्यकता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शोध के महत्व को रेखांकित करते हुए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों पर प्रसन्नता व्यक्त की और 'इण्डोरामा कार्पोरेशन' की ओर से एक शोधपीठ (Research chair) के लिए दो करोड रुपये की राशि की पेशकश की।

कुलाधिपति ने श्री लोहिया को विश्वविद्यालय, डी.ए.वी. प्रबंधक समिति तथा समारोह में उपस्थित उद्योगपतियों की ओर से सम्मानित करते हुए अंग वस्त्र तथा स्मृतिचिन्ह देकर सम्मानित किया। किया। श्री सूरी ने डी.ए.वी. के इतिहास का संक्षिप्त परिचय देते हुए आंदोलन के तहत शिक्षा के आदर्शों का खुलासा किया और डी.ए.वी. से संबधित साहित्य तथा चारों वेदो का सैट भेंट किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. के . कोहली ने विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों, परिसर में उपलब्ध सुविधाओं की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की।

इस अवसर पर पंजाब के लोक संगीत तथा वाद्यों की एक मनोहारी प्रस्तुति हंसराज महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के लिए यह एक मधुर स्मृति बन गई।

श्री श्रीदीप ओमचारी, उप–प्रधान, डी.ए.वी. प्रबंधक समिति ने सभी का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. जींद में हुआ वार्षिक समारोह

डी.ए.वी. विद्यालय जीन्द में विद्यालय की 25वीं वर्षगाँठ मनाने के साथ जल चेतना अभियान के साथ–साथ वार्षिक उत्सव भी आयोजित किया गया। डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के सेक्रेटरी श्री रविन्द्र कुमार जी मुख्य अतिथि थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता डी. ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के कोषाध्यक्ष श्री महेश चोपड़ा जी ने की। समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में जीन्द जोन के क्षत्रीय निदेशक श्री धर्मदेव विद्यार्थी जी व कैथल जॉन की क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन उपस्थित थे। समारोह का शुभारम्भ हवन यज्ञ तथा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उसके उपरान्त मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों ने विद्यालय के नये भवन के निर्माण का शिलान्यास किया तथा पौधारोपण किया। समारोह में लगभग 215 बच्चों ने भाग लेते हुए तथा जल संरक्षण का महत्व लघु नाटिका प्रस्तुत की। समारोह में भारी संख्या में अभिभावकों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को चार चाँद लगा दिये इस अवसर पर शैक्षणिक व सह शैक्षणिक गतिविधियों में राज्य, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों ने कार्यक्रम की अत्यन्त सराहना की। विद्यालय के सत्र 2011–12 की परिणाम विवरणिका का विमोचन किया गया। प्राचार्य श्री हरेश पाल पांचाल ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट, अतिथि व अध्यक्ष महोदय का विद्यालय में आगमन के लिए धन्यवाद व्यक्त किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **श्री पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 21 जुलाई, 2013 से 27 जुलाई, 2013

जंगम - स्थावर का राजा

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा, शमस्य च शृङ्गिणो वज्त्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनाम्, अरान्न नेमिः परि ता बभूव।।

ऋग् 1.32.15

ऋषिः **हिरण्यस्तूपः आङ्गिरसः।** देवता **इन्द्रः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**वज्त्रबाहु**) वज्त्रभुज (**इन्द्रः**) परमेश्वर (**यातः**) चलने–फिरने वाले का, (**अवसितस्य**) निश्चल का (**शमस्य**) शांत का, (**शृङ्गिण च**) और तीक्ष्ण वृत्ति वाले का (**राजा**) राजा [है]। (सः इत्) वही (**चर्षणीनां**) मनुष्यों का (**राजा**) राजा [होकर] (**क्षयति**) निवास कर रहा है। (**अरान्**) अरों को (**नेमिः न**) परिधि के समान [वह] (**ता**) उन्हें (**परि बभूव**) चारों ओर से व्याप्त किये हुए है।

मैं अपने इन्द्र प्रभु का क्या वर्णन करुँ, कैसे उसकी महिमा का गान करूँ? उसकी महिमा के गीत गाने को जी चाहता है, पर वाणी में शब्द नहीं मिलते। फिर भी टूटे–फूटे शब्दों में ही सही, कुछ तो गुनगुना लूँ, कुछ तो अपने मन की साध पूरी कर लूँ। मेरा प्रभु चलने फिरनेवाले जंगम अर्थात् चेतन जगत् और निश्चल होकर बैठ स्थावर अर्थात् जड़–जगत् दोनों का राजा है, दोनों पर उसका अधिपत्य है। वह पशु, पक्षी, सरीसृप, मानव आदि तथा वन, पर्वत, नदी, सागर, सूर्य, चन्द्र आदि सबका अधिष्ठाता और व्यवस्थापक है। उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता तक नहीं हिल सकता। वह शान्त–जीवन व्यतीत करने वाले, तप–साधन में निरत रहने वाले शान्तवृत्ति ऋषि–मुनियों का भी राजा है और तीक्ष्णश्रृंग अर्थात् तीक्ष्ण साधनों का अवलम्बन करने वाले तीक्ष्णवृत्ति रजोगुणियों का भी राजा है, नियन्त्रधकर्ता है। वह वज्त्रबाहु है, भुजा में वज्त्र धारण किये है और उच्छृङ्खलों को उनके उच्छृङ्खल कर्मों के अनुसार यथायोग्य दण्ड दे रहा है। कोई उसकी दण्ड–व्यवस्था से कितना ही बचना चाहे, बच नही सकता। वही हम सब 'चर्षणियों' का कृषिकर्ता मानवों का, भी राजा होकर निवास कर रहा है, चाहे हम अपनी मनोभूमि का कर्षण करके उसमें सद्गुणों का बीज वपन कर आन्तरिक सम्पदा को लहलहाते हों, चाहे हल चलाकर, उत्तम बीज बोकर बाह्य भूमि को सस्यश्यामला बनाते हों।

जैसे रथ–चक्र की नेमि समस्त घरों को चारों ओर से व्याप्त किये होती है और अपने में थामे होती है, वैसे ही जगत् का राजा वह इन्द्रदेव जगत् की वस्तुओं के चारों और व्याप्त होकर उन्हें सहारा दिये हुए है, तभी संसार के सब पदार्थ पृथक्–पृथक् इकाई होते हुए भी परस्पर सामंजस्य रखे हुए हैं और विश्व के चक्र को चला रहे हैं। अन्यथा उनकी स्थिति वैसी ही हो जाए, जैसी नेमि के टूट जाने पर रथ–चक्र के अरों की होती है, तब विश्वचक्र–प्रवर्तन ही समाप्त हो जाए।

आओं, हम एक स्वर से अपने उस राजराजेश्वर इन्द्र प्रभु के चरण–चंचरीक बनकर उसकी महिमा का गुंजार करें।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

बृहदारण्यक उपनिषद् के पांचवें अध्याय के चौथे ब्राह्मण में ऋषि ने कहा उस सत्यस्वरूप का निवास दिल में है वहाँ उसे ढूंढ लो, वह तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठा है। आज संसार में सब उसी को खोजते फिरते हैं। लेकिन जिन वस्तुओं के पीछे भाग रहे हो वह तो केवल छाया है, वास्तविक नहीं। कोरे ज्ञान की बातें करने से वह नहीं मिलता। वह करुणा सिन्धु तो हृदय के प्यार को देखता है। आपके हृदय में उसके लिए प्यार है तो वह मिलेगा अवश्य।

परन्तु सारा संसार इसी प्यार के बिना ही उस प्रीतम को खोजता है। मनुष्य भागा फिरता है आनन्द की पीछे लेकिन सांसारिक बातों में आनन्द कहाँ? इसका यह भी अर्थ नहीं कि धन और संसार के अन्य पदार्थ निन्दनीय हैं। इतना अवश्य जानना होगा इनसे सुख तो मिल सकता है, आनन्द नहीं। आनन्द का स्थान दूसरा है।

संसार के प्रत्येक पदार्थ का कोई–न–कोई आधार होता है। इस आधार को पृथक् कर दीजिए पदार्थ बचेगा नहीं। हमार आधार हवा है। मछली का आधार जल है। इसी प्रकार आत्मा का आधार है परमात्मा। उसके साथ रहेंगे तो बचेंगे अन्यथा तड़पते रहेंगे, बेचैन रहेंगे।

अब आगे.....

रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री टालस्टाय ने एक कहानी लिखी है। एक थे पादरी महोदय, बहुत बड़े धर्मप्रचारक। स्थान–स्थान पर जाकर लोगों को ईसा महोदय को उपदेश देते। वे प्रार्थना सिखाते जो बाइबिल में लिखी है। लोगों को कहते, ''यह प्रार्थना करो, तभी तुम्हारा कल्याण होगा।'' देश से बाहर दूसरे देशों में भी वे जहाज् में बैठकर गये। जहाज् चल रहा था। उन्होंने सागर में एक दिन छोटा सा द्वीप देखा। सोचा, शायद यहाँ भी कोई व्यक्ति होगा, चलो उसके पास चलें; उसे ईश्वर–प्रार्थना करने का मार्ग बतायें। द्वीप में उतरे अपने साथियों समेत। इधर–उधर देखा परन्तु कोई दिखाई नहीं दिया; तभी द्वीप के दूसरी ओर से तीन बूढ़े आते दिखाई दिये। पादरी महोदय रुक गये। बूढ़े निकट आये तो पादरी ने देखा, दाढियाँ सफेद हैं, सिर के बाल भी सफेद हैं। वृक्षों की छाल से उन्होंने अपना शरीर ढाँप रखा है, कोई भी वस्त्र उनके पास नहीं। पादरी ने पूछा, यहाँ कोई ग्राम अथवा नगर नहीं?''

एक वृद्ध ने कहा, ''नही, इस द्वीप में हम तीन ही रहते हैं, चौथा कोई नहीं। फल हैं वे खा लेते हैं, पानी है वह पी लेते हैं। कभी कोई भूला–भटका इधर आ जाए तो उसे पानी दे देते हैं।''

पादरी ने कहा, ''यही करते हो? अरे अभागो! उस ईश्वर को भी याद करो जिसने तुम्हें उत्पन्न किया है।''

दूसरे वृद्ध ने कहा, ''उसे तो हम स्मरण करते ही हैं। उसे स्मरण करने के अतिरिक्त और कोई काम हमें है नहीं।''

पादरी ने पूछा, ''किस प्रकार स्मरण करते हो?''

तीसरे वृद्ध ने कहा, ''हम तीनों बैठ जाते हैं, ऊपर देखते हें, हाथ उठाकर कहते हैं– हम तीन हैं, तुम तीन हो, हमारी रक्षा करो।''

पादरी ने कहा, ''यह क्या मूर्खो की–सी प्रार्थना है? तुम लोग बूढ़े हो गए। सारा जीवन तुमने नष्ट कर दिया। बैठो, मैं तुम्हें वास्तविक प्रार्थना सिखाता हूँ।''

और पर्याप्त समय लगाकर, पर्याप्त प्रयत्न के पश्चात् उसने बाइबिल में लिखी हुई प्रार्थना उन्हें सिखाई, उनसे सुनी और जब तसल्ली हो गई कि वे ठीक प्रकार से सीख गये हैं तो उपने जहाज् में बैठकर चल दिये। खुले समुद्र में पहुंचे। एक दिन व्यतीत हो गया। दूसरे दिन प्रातः जहाज् पर खड़े एक व्यक्ति ने पीछे की ओर देखकर

कहा, ''दूर वह काला–सा धब्बा क्या है?''

पादरी ने पीछे की ओर देखा; बोला ''कुछ है तो सही जैसे कोई द्वीप हो; परन्तु उधर से तो हम आये हैं, उधर तो कोई द्वीप था नहीं। उन बूढ़ों वाला द्वीप भी बहुत पीछे रह गया है।''

तभी उसी व्यक्ति ने कहा, ''पादरी जी! एक नहीं तीन धब्बे हैं, वे और बड़े हुए जाते है।'' पादरी ने भी देखा; बोले, सचमुच ये तो तीन हैं और बड़े होते जाते हैं जैसे हमारे समीप आ रहे हों।''

उस व्यक्ति ने कहा, '' परन्तु हम तो परे जा रहे हैं।'' तभी पादरी ने ध्यान से देखते हुए कहा ''अरे! यह द्वीप नहीं समुद्री पशु प्रतीत होते हैं, बढ़े चले आ रहे है।''

परन्तु कुछ ही देर में जहाज़वालों ने देखा कि वे पशु नहीं, वे ही तीन वृद्ध हैं जिन्हें एक दिन पूर्व उस द्वीप में वे प्रार्थना सिखाकर आये थे। इस समय तीनों वृद्ध दौड़े आ रहे थे। हाथ उठा–उठाकर आवाज भी दे रहे थे। पादरी ने चिल्लाकर कहा, ''जहाज़ रोको!''

जहाज़ रुका, परन्तु पादरी महोदय चकित कि ये लोग पानी पर कैसे दौड़ रहे हैं? डूबते क्यों नहीं?

उन तीनों बूढ़ों ने जहाज़ में आकर कहा, ''पादरी महोदय! हम अनपढ़ व्यक्ति हैं। आप जो प्रार्थना हमें सिखा आये थे, वह हम भूल गए। वे शब्द ठीक प्रकार स्मरण नहीं रहे। कृपा करके उन्हें फिर से सिखाइये।''

पादरी ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा; बोले, '' मगर तुम पानी पर दौड़े किस प्रकार?''

एक वृद्ध ने कहा, ''यह तो साधारण बात है पादरी महोदय! हम भगवान् से बोले– 'हमें पादरी महोदय के पास जाना है, दौड़ हम लेंगे, नौका हमारे पास नहीं। तुम कृपा करो कि हम दौड़ते चले जाएं, पानी में डूब न जायें' ओर हम चल पड़े।''

पादरी ने हाथ जोड़ दिये, सिर झुका दिया उनके सामने, धीरे से बोला, ''महात्मा लोगों ! तुम वापस जाओ। वही प्रार्थना करो जो पहले किया करते थे। ईश्वर तुम्हारे हृदय की आवाज सुनता है, उसे शब्दों की आवश्यकता नहीं।''

यह एक काल्पनिक कहानी है। लेखक महोदय इस कथा से यह बताना चाहते हें कि वह आनन्दसिन्धु, करुणा का सागर भगवान् हृदय के प्यार को देखता है। आपके हृदय में उसके लिए प्यार है तो वह मिलेगा अवश्य।

परन्तु इस प्यार के बिना भी सारा संसार इसको खोजता है। धनी लोग यदि धन चाहते हैं, योगी यदि योग करते हैं, तपस्वी यदि तप करते हैं तो क्यों? आनन्द के लिए, जिसका दूसरा नाम ईश्वर है। इस आनन्द के पीछे भागता हुआ मनुष्य कितने ही प्रयत्न करता है। ये धन्धे और व्यापार, ये दुकानें और दफ्तर, ये स्कूल और कॉलिज, ये वैज्ञानिक आविष्कार, राजनैतिक हलचल, यह निरन्तर भाग–दौड़ अन्ततः आनन्द के लिए ही तो है। मनुष्य भागा फिरता है उस आनन्द के पीछे परन्तु इन सांसारिक बातों में आनन्द कहीं मिलता नहीं; आनन्द किसी दूसरे स्थान पर है। मैं धन की और संसार के अन्य पदार्थों की निन्दा नहीं करता। धन न हो तो जीवन–निर्वाह कठिन हो जाता है। धन के बिना खाना और कपड़ा भी नहीं मिलता, साइकिल और ताँगा नहीं मिलता। धन हो तो ये सब मिलते हैं, परन्तु ये मिल भी जायें तो केवल सुख मिलता है, आनन्द तो नहीं मिलता। आनन्द का स्थान दूसरा है। ये सब वस्तुएं प्राकृतिक हैं, प्रकृति में आनन्द है नहीं।

देखो, मैं यह नहीं कहता कि प्रकृति की कोई हस्ती ही नहीं। यह हमारे सामने विद्यमान है, फिर इससे इन्कार कौन कर सकता है! इस संसार को बनाने वाला सत्य है, जिसके लिए यह संसार बनाया गया है वह सत्य है, जिसने बनाया है वह सत्य है। यह जगत मिथ्या नहीं, केवल एक स्वप्न नहीं; यदि ऐसा होता तो प्रकृति के रहस्यों को खोजने वाले बड़े–बड़े वैज्ञानिक इतने बड़े–बड़े आविष्कार न कर सकते; मनुष्य के लिए शक्ति और सुख की इतनी वस्तुएं उत्पन्न न कर सकते। उनका ऐसा करना ही इस बात का प्रमाण है कि यह संसार मिथ्या नहीं, केवल एक स्वप्न ओर छलावा नहीं। परन्तु सत्य होने पर भी इसमें आनन्द तो है नहीं। इसलिए प्रकृति से बने इस संसार में भी आनन्द नहीं। जो लोग इस प्रकृति में फँसे रहते हैं उन्हें आनन्द कभी मिलता नहीं।

सर न्यूटन हुए हैं न? बहुत बड़े वैज्ञानिक थे वे। 'पृथ्वी में आकर्षण–शक्ति है, वह प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है'– यह सिद्धान्त सबसे पूर्व उन्होंने वृक्ष से सेब को गिरते हुए देखकर निकाला। सिद्धान्त तो पहले भी था। उन्होंने इसे जानकर संसार को बताया। एक दिन उन्हें गर्मी लगी तो पंखा बनाया उन्होंने। पंखा बन गया तो प्रश्न उत्पन्न हुआ इसे हिलाये कौन? न्यूटन महोदय ने एक दन्दाने–दार चक्र बनाया। ऐसा प्रबन्ध किया कि चक्र चले तो पंखा भी चले, हवा देने लगे। परन्तु फिर प्रश्न उत्पन्न हुआ कि चक्र कैसे चले? न्यूटन ने चक्र के साथ तनिक ऊपर करके गेहूँ के दाने रख दिये। चक्र में दो चूहे रख दिये। चूहों ने गेहूँ के दानों को देखा तो उछलकर चक्र की ऊपर वाली सीढ़ी पर पहुँचे कि दानों तक पहुँच जायें; परन्तु वे तो दानों तक पहुँच नहीं पाये, उनके वजन से चक्र हिल गया। वह सीढ़ी नीचे आ गई। चूहे फिर कूदे, चक्र फिर हिला। सीढ़ी फिर नीचे। इस प्रकार वे चूहे बार–बार छलांग लगाते कि अब मिल जायें गेहूँ के दाने, अब मिल जायें। उनकी इस उछल–कूद से पहिया चलने लगा, पंखा हिलने लगा। न्यूटन को हवा मिलने लगी। चूहों को एक भी दाना नहीं मिला।

मकान नहीं है। एक व्यक्ति दूसरे के मकान को देखता है। बड़ी–बड़ी कोठियाँ देखता है। सोचता है कि मेरी भी कोठी बन जाये तो मुझे भी आनन्द मिल जायेगा। प्रयत्न किया, कोठी बन गई, परन्तु आनन्द तो नहीं मिला। फिर सोचा कोठी में बिजली आ जाये तो सुख मिलेगा। प्रयत्न किया, बिजली आ गई, परन्तु आनन्द तो अब भी नहीं मिला। फिर सोचा, पानी आ जाये तो आनन्द हो जायेगा। की भाग–दौड़। कमेटी का नलका आ गया। एक ट्यूबवेल भी लग गया। तालाब भी बन गया। परन्तु सुख तो अबी भी मिला नहीं। सोचा एक और छलांग लगाऊँगा, विवाह कर लूँगा तो सुख के दाने मिल जायेंगे। हो गया विवाह, परन्तु सुख तो मिला नहीं। सैकड़ों अन्य समस्याएं अवश्य खड़ी हो गई।

अरे ओ मानव ! सोचकर देख, तू उन चूहों की भाँति छलांग के पश्चात् छलांग लगाता है कि आनन्द के दाने तुझे मिल जायें परन्तु इस संसार के चक्र में ऐसा फँस गया है तू कि ये दाने कभी मिलते नहीं।

मकान नहीं है। एक व्यक्ति दूसरे के मकान को देखता है। बड़ी–बड़ी कोठियाँ देखता है। सोचता है कि मेरी भी कोठी बन जाये तो मुझे भी आनन्द मिल जायेगा। प्रयत्न किया, कोठी बन गई, परन्तु आनन्द तो नहीं मिला। फिर सोचा कोठी में बिजली आ जाये तो सुख मिलेगा। प्रयत्न किया, बिजली आ गई, परन्तु आनन्द तो अब भी नहीं मिला। फिर सोचा, पानी आ जाये तो आनन्द हो जायेगा। की भाग– दौड़। कमेटी का नलका आ गया। एक ट्यूबवेल भी लग गया। तालाब भी बन गया। परन्तु सुख तो अबी भी मिला नहीं। सोचा एक और छलांग लगाऊँगा, विवाह कर लूँगा तो सुख के दाने मिल जायेंगे। हो गया विवाह, परन्तु सुख तो मिला नहीं। सैकड़ों अन्य समस्याएं अवश्य खड़ी हो गई।

जिन दानों की इच्छा तेरे हृदय में है, वे इस प्रकार कभी मिलेंगे नहीं। तू प्रकृति के चक्र में फँस गया है। गेहूँ के दाने इससे बाहर हैं। छलांग के पश्चात् छलांग लगातास चला जा, आनन्द के दाने कभी मिलेगें नहीं। इन्हें प्राप्त करना है तो ऊपर की ओर छलांग लगा।

संसार में प्रत्येक पदार्थ का कोई–न कोई आधार होता है, कोई आहार होता हे। इस पदार्थ को पृथक् कर दीजिये तो वह बचेगा नहीं।

हम लोग हैं न ! हमारा आधार हवा है। हम अन्न के बिना कई दिन तक जी सकते हैं। पानी के बिना भी कुछ दिन जी सकते हैं, परन्तु वायु न मिले तो कुछ क्षणों में हमारा जीवन समाप्त हो जाता है।

मछली का आधार जल है। उसे पानी से बाहर निकालिये शुष्क भूमि पर रखकर देखिये कि किस प्रकार तड़पती है, छटतपाती है; और यदि उसे शीघ्र पानी में न डाल दें तो कुछ ही क्षणों में मर जाती है।

इसी प्रकार आत्मा का आधार है परमात्मा। उसके साथ यदि हम रहेंगे तो बचे रहेंगे, नहीं तो तड़पते रहेंगे। पानी का छलावा मिलेगा हर ओर, पानी नहीं मिलेगा। इस जलते हुए, झुलसते हुए मरुस्थल में सुख की छाया मिलेगी हर ओर, सुख नहीं मिलेगा।

शेष अगले अंक में....

ऋग्वेद में दान

● शिव नारायण उपाध्याय

वैदिक धर्म में दान की बड़ी महत्ता है। किसी भी निर्धन, अशक्त, विकलांग, विपदाग्रस्त व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार कुछ पदार्थ सहयोग के रूप में दे देना तथा उसकी पुनः प्राप्ति की इच्छा भी न करना ही दान है। इसी प्रकार किन्ही संस्थाओं को जो समाज सेवा में निस्वार्थ भाव से कार्य कर रही हों, सहायतार्थ कुछ आर्थिक सहायता अथवा सामग्री दे देना भी दान ही कहलाता है। राष्ट्रीय आपदा जैसे भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़ अथवा अकाल से पीड़ित जनता की सब तरह से की जाने वाली सहायता दान ही कहलाती है। ऋग्वेद में भी इस दान की महिमा पर बहुत कुछ कहा गया है, यहां पर हम वहीं से कुछ ऋचाओं को लेकर दान पर प्रकाश डालने का प्रयास कर रहे हैं।

स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्। ऋ. 10.117.3

पदार्थ – (सः) वह (इत्) ही (भोजः) दाता है (यः) जो (गृहवे) प्रतिगृहिता (अन्नकामाय) अन्न चाहने वाले (चरते) घर पर जाकर याचना करने वाले (कृशाय) अभाव से पीड़ित के लिए (ददाति) देता है! (अस्मै) उसके लिए (यामहुतौ) इस दान रूपी यज्ञ में (अरम्) पर्याप्त फल (भवति) होता है। उसे समाज में बड़ा सम्मान प्राप्त होता है। (उत) और (अपरीषु) अन्य विराधी वर्गो में भी (सखायम) मित्र (कृणुते) बना लेता है। जिसके पास पर्याप्त मात्रा में धन सम्पत्ति है उसे दान देने में कृपणता के वश में नहीं होना चाहिए।

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राधीयासमनु पश्येत पन्थाम्।
ओहि वर्तन्तेरथ्येव चक्रान्यमन्यनुपतिष्ठन्तः रायः। ऋ. 10.117.5

पदार्थ– (तव्यान्) धन आदि से प्रबुद्ध मनुष्य को (इत्) भी चाहिए कि (नाधमानाय) याचना करने वाले को (पृणीयाद) धन देवे (द्राधीयासम्) दीर्घतम (पन्थम्) व्यवहार और सुकृत के मार्ग को (अनुपश्येत) देखे, (ओहि) अरे (रायः) ये धन तो (रथ्या चक्रा) रथ के पहिये के (इव) समान (वर्तन्ते)होते हैं और (अन्यम् अन्यम्) दूसरे से दूसरे के पास (उपतिष्ठन्ते) ठहरते हैं।

भावार्थ– धन सम्पदा से बढ़े हुए व्यक्ति को भी चाहिए कि वह याचना करने वाले को धन देवे और व्यवहार तथा परमार्थ के दीर्घतम मार्ग को देखे। अरे ये धन तो रथ के पहिये के समान फिरते हैं और एक से दूसरे के पास जाते रहते हैं।

मोघमन्नं विन्दते अप्रेचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
न्यार्यमणं पुष्यति नो सखाय केवलाधो भवति केवला दी। ऋ. 10.117.6

(अप्रचेतः) अप्रकृट ज्ञान (स) वह अदाता धन का स्वामी (अन्नम्) अनादि पदार्थो को (मोघम्) व्यर्थ (वन्दते) प्राप्त करता है। मैं परमेश्वर (ब्रवीमि) कहता हूँ कि (सत्यम) वास्तव में (तस्य) उसकी यह (वधःइत्) मौत ही है (नं) न तो वह (अर्यमणम्) सत्यवादी विद्वान् का (पुष्यति) पोषण करता है। (न) और न (सखायाम्) आपत्ति ग्रस्त मित्र का पोषण करता है। (केवलादी) अकेला खाने वाला वह (केवलाद्यः) केवल पाप का खाने वाला (भवति) होता है।

भावार्थ– आगे पीछे न देखने वाला वह धन का स्वामी अन्न आदि पदार्थो को व्यर्थ ही प्राप्त करता है। मैं ईश्वर यह उपदेश करता हूँ कि वास्तव में उसका यह धन उसकी मौत है। न तो वह विद्वान् का पोषण करता है और न आपत्ति में पड़े साथी जन का ही वह पोषण करता है। वह अकेला भोग करने वाला, अकेला खाने वाला केवल पाप का खाने वाला होता है।

धन की सबसे अच्छी गति केवल दान ही है।

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं चवाजिनम्। ऋ. 10.141. 5.

दान तो वास्तव में जड़ पदार्थ भी देते रहते है ऐसा इस ऋचा में वर्णन हैं। अगली ऋचा भी इसी प्रकार की है। पदार्थ– हे परमेश्वर! आप (अर्यमणम्) अग्नि (बृहस्पतिम्) पर्जन्य (इन्द्रम्) विद्युत (वातम्) वायु (विष्णुम्) यज्ञ (सरस्वतीम्) माध्यमिका वाक् (च) और (वाजिनम्) अन्नों वाले (सवितारम्) सूर्य को हमारे लिए (दानाय) दानार्थ (चोदय) प्रेरित कीजिए।

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदये। ऋ.10.141.

पदार्थ– हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप परमेश्वर! (त्वम्) तू (अग्निभिः) गतिशील शक्तियों और अग्नि आदि पदार्थो से (नः) हमारे (ब्रह्म) ज्ञान (च) और यज्ञ को (वर्धय) बढ़ा (त्वम्) तू (नः) हमे (देवतातये) यज्ञ भावना की पूर्ति के लिए (रायः) धन के (दानय) प्रदान करने के लिए (चोदय) प्रेरित कर।

भूरिदा भूरि देहि नोमा दभ्रं भूर्या भर।
भूरि धेरिन्द्र दित्ससि। ऋ. 4. 32 .20

पदार्थ– हे (इन्द्र) देने वाले ! जो आप (नः) हम लोगों के लिए (भूरि) बहुत (दित्ससि) देने की इच्छा करते हो वह (भूरिदाः) बहुत देने वाले आप हम लोगों के लिए (भूरि) बहुत (देहि) दीजिए और (भूरि) बहुत को (आ भर) सब प्रकार धारण कीजिए (दभ्रम्) थोड़े को (ध) ही (मा) मत दीजिए और थोड़े को (इत्) ही न धारण कीजिए। भावार्थ – जो बहुत देने वाला है वही प्रशंसा को प्राप्त होता है और जो थोड़ा देने वाला वह इस प्रकार प्रशंसित नहीं होता है।

भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरूत्रा शूर वृत्रहन्।
आ नो भजस्व राधसि। ऋ 4. 32. 21

पदार्थ– हे (शूर) शत्रुओं का नाश करने वाले (वृत्रहन्) धन को प्राप्त राजन्! आप (हि) जिससे (भूरिदाः) बहुत देने वाले (असि) हो। इससे (पुरूत्रा) बहुतों में प्रतिष्ठित और (श्रुतः) सब जगह प्रसिद्व यज्ञ वाले हो जिससे आप (नः) हम लोगों को (राधसि) अच्छे प्रकार साधते हो इससे हम लोगों को (आ भजस्व) अच्छे प्रकार सेवो। भावार्थ – जो इस संसार में बहुत देने वाला होता है वही सम्पूर्ण दिशाओं में कीर्तिवाला होता है। जो हमसे दान की याचना करे उसे हमें दान अवश्य देना चाहिए।

यो नः सनुत्यो अभिदासदग्नेयोअन्तरोमित्रमहोवनुष्यात्।
तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तषातपिष्ठ तपसा तपस्वान। ऋ. 6. 5. 4.

पदार्थ– हे (तपिष्ठ) अत्यन्त तप करने वाले और (मित्रमहः) बड़े मित्रों से युक्त (अग्ने) विद्वन् (यः) जो (सनुत्यः) निश्चित अन्तर्हित अर्थात् मध्य के सिद्धान्तों से प्रकट हुआ अथवा श्रेष्ठ (नः) हम लोगों का (अभि दासत्) चारों ओर से नाश करता है और (यः) जो (अन्तरः) हम लोगों से भिन्न (वनुष्यात्) याचना करे (तम्) उसकी (अजरेभिः) वृद्धावस्था से रहित (वृषभिः) बलिष्ठ युवा (तव) आपके (स्वैः) अपने जनों के साथ (तपः) तप युक्त करो वा तपस्वी होओ और (तपसा) बह्मचर्य और प्रणायाम आदि कर्म से (तपस्वान) बहुत तपवान हूजिये। भावार्थ– हे मनुष्यों। जो आप लोगो से याचना करे उस सुपात्र के लिए यथा शक्ति दान करिये और जो पीड़ा देवे उसको पीड़ित करो और तपस्वी होकर धर्म का आचरण करो। इति

शिवनारायण उपाध्याय,
73 शास्त्री नगर, कोटा (राज.)

मानव की वरणीय संस्कृति

● उमाकान्त उपाध्याय

आजकल ''संस्कृति'' शब्द का बड़ा भ्रामक प्रयोग हो रहा है। यह प्रयोग–भ्रष्टता कब से चली, कहाँ से चली, यह तो समझ में नहीं आया, किन्तु इस समय ''सांस्कृतिक कार्यक्रम'' और "cultural program" से यह समझा जाता है कि यहाँ संगीत, वाद्य, नाटक, नृत्य, कविता पाठ आदि का आयोजन हो रहा है। वस्तुतः संस्कृति मानव समाज के उत्थान का प्राण और मानवता के श्रेष्ठ गुणों की आत्मा है। मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक चरित्र का श्रेष्ठतम स्वरूप मानव संस्कृति है। परस्पर प्रेम, दया, करुणा, सहानुभूति आदि मानव संस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

सभ्यता और संस्कृति, दो शब्दों का युग्म, जोड़ा, प्रायः बोलचाल में प्रयोग में आता है। सभ्यता समाज का बाह्य रूप, शरीर के समान है। वस्त्र, पोशाक, भेष, घर, बागान, मार्ग–साड़ी, गाड़ी, बाड़ी, सभ्यता के अंग हैं और व्यक्ति और समाज की आंतरिक विशेषताएं संस्कृति है। इसीलिए सभ्यता समाज का बाह्य दर्शन, वाहिनी स्वरूप शरीर जैसा है और संस्कृति चरित्र के आतंरिक गुण,प्रेम स्नेह, दया, करुणा, द्वेष–हीनता, काम, क्रोध, लोभ आदि से निवृत्ति ''संस्कृति'' के अंग हैं।

यूरोप, पश्चिमी देशों की वर्तमान संस्कृति का आधार डार्विन का विकासवाद है। विकासवाद का मूल आधार है– ''योग्यतम की जीत'' (survival of the fittest). अर्थात् जिसकी लाठी उसकी भैंस, बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, मनुष्यों का भी बलवान समुदाय निर्बल समुदाय पर अधिकार करके उनका शोषण करता है। साम्यवादी संस्कृति का आधार है – वर्ग–संघर्ष – वर्गों का आपस में लड़ना और बलवान का जीतना। ये सब पशु संस्कृति है। इसका प्रचलन मनुष्य समाज को पशु बना देता है। इस समय तो भूमंडलीकरण और बहु–राष्ट्रीय कंपनियों की नीति उपभोक्तावाद (consumerism) मनुष्यों को पशुओं से बदतर बनाकर उपभोग को बढ़ाना हो गया है। उपभोक्ता मरे या जिये, लाल मांस, शराब, अंडे आदि के उपभोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। यह मानवता के नाम पर कलंक हैं।

इन सबसे पृथक भारतीय संस्कृति का एक वरेण्य स्वरूप वेद में मिलता हैं–

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेशम् कृणोमि वः;
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या–अथर्व 3/30/1

वेद की वाणी में परमेश्वर ने मानव को उपदेश दिया है कि हम (परमेश्वर) तुम्हें सहृदय–सुख–दुखः में परस्पर सहानुभूति, सौमनस्य वाला (सुन्दर मन वाला), द्वेष–रहित बना रहे हैं। ऐ मानव! तुम एक दूसरे को इतना प्यार करो, ऐसे प्यार करो जैसे गाय अपने तुरंत उत्पन्न हुए बच्चे को प्यार करती है। गाय का अपने बच्चे को प्यार करना, सो भी तुरंत उत्पन्न हुए बच्चे को प्यार करना, संसार के निश्छल, निःस्वार्थ प्रेम का श्रेष्ठतम उदाहरण है। गाय और बछड़े का यही प्रेम–पूर्ण व्यवहार मानव संस्कृति का, मानव समाज की संस्कृति का

शेष पृष्ठ 6 पर ☞

ऐसे थे दयानन्द

● कृष्णचन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया।

महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात् आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई नाम न था। इस प्रकार हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया।

स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं ''जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र योग दर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।''

स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और हिन्दुत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति–प्रथा, सती, विधवा विवाह का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पूराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाइयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमा और ईसाई बनते। हिन्दु मत कच्चे धागे की तरह बन गया था जिसे हलके झटके से तोड़ा जा सकता था। महर्षि दयानन्द ने पुराणों का पुरजोर खण्डन किया और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को प्रकट किया। इस्लाम और ईयाईयत की कमियां और खराबियां दिखाकर हिन्दुओं में आत्मविश्वास पैदा किया जिससे उन्हें अपने वैदिक धर्म में बने रहने की प्रेरणा मिली और हिन्दू मत लोहे की छड़ सा मजबूत हो गया।

महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया–सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य–असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में उपनिषद का निम्न श्लोक उद्धृत किया है–

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्। न हि सत्यापरं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात् सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें।

महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिह्नों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है– 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात् बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है– आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं ''देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, पर स्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़ पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठ निन्दा क्यों कर होती।''

महाभारत के उद्योगपर्व (विदुरनीति) में एक श्लोक है–

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

महात्मा विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं– हे राजन्! इस संसार में दूससरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं। परन्तु सुनने में अप्रिय लगे और वह कल्याण करने वाला वचन हो उसका कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है।

महर्षि दयानन्द ऐसे ही हितकारक वचन कहने वाले बिरले मनुष्य थे। वे राजे–महाराजाओं के सामने, बड़े से बड़े अंग्रेज अफसरों की उपस्थिति में, मुल्ला मौलवियों और पण्डों की मौजूदगी में निर्भीक होकर सबके हित की सत्य बात कहा करते थे।

महर्षि दयान्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य–असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया।

स्वामी जी मूर्तिपूजा को सब बुराइयों की जड़ मानते थे और मन्दिरों को उनके अड्डे मानते थे। जुलाई 1869 की बात है। कानपुर में पं. गुरुप्रसाद और प्रयागनारायण ने 'कैलास' और 'बैकुण्ठ' नामक दो मन्दिर बहुत रुपया लगाकर बनवाए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था कि आप लोगों ने लाखों रुपया व्यर्थ खो दिया। इससे तो यह अच्छा था कि कन्याकुब्ज़ कन्याओं का जो 30–30 वर्ष की कुमारी बैठी हैं, विवाह करवा देते या कोई कला–कौशल का कारखाना खोलते जिससे देश और जाति का भला होता।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन् 1872 में भागलपुर में प्रसंग आने पर स्वामी जी ने कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं कि हिन्दुओं को मुसलमानों से स्वाभाविक द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार है।

महर्षि दयानन्द के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य परोपकार था। सन् 1868 के आरम्भ की बात है। कर्णवास में एक दिन पण्डित इन्द्रमणि ने स्वामी जी से कहा कि आप अवधूत होकर खण्डन–मण्डन के बखेड़े में क्यों पड़े हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि ''मेरे लिए बखेड़ा नहीं है, प्रत्युत यह ऋषि का ऋण चुकाना है। स्वार्थी लोगों ने ऋषि–सन्तान को कुरीतियों में फँसा रखा है। मुझसे उसकी यह दीन दशा देखी नहीं जाती। मैंने उसे सन्मार्ग पर लाने का प्रण कर लिया है।'' इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज का छठा नियम बनाया– संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी प्रकार आर्य समाज का नौवां नियम बनाया– प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

सन् 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोग व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं।

स्वामी जी कहते थे पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य–सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे भी यह कहते थे ''मेरा काम लोगों के मनमंदिरों से मूर्तियाँ निकलवाना है, ईंट–पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना–फोड़ना नहीं है।''

सन् 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया–मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

भोजन कैसे भ्रष्ट होता है– फर्रुखाबाद में एक दिन एक साध स्वामी जी के लिए कढ़ी और चावल बनाकर लाया और उन्होंने उसे खा लिया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधों के घर का भोजन खा लिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता हे– एक तो यदि किसी को दुख

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

चमत्कारों का पोलखाता

● इन्द्रजित् देव

विज्ञान का एक सर्वमान्य नियम है– बिना कारण कार्य नहीं होता। लोहे बिना रेल का पहिया या पटरी नहीं बन सकती। लोहा रेल का कारण है व रेल का पहिया व पटरी इसके कार्य है। इसी प्रकार आटा रोटी का कारण है व रोटी उसका कार्य है। जिस प्रकार लोहे बिना रेल का पहिया व आटे बिना रोटी नहीं बन सकती, इसी प्रकार हमें यह भी मानना होगा कि इस सृष्टि का भी कोई –न–कोई कारण तो होगा ही। यह वैदिक सिद्धान्त है जिसे आज का विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है। Matter cannot be created, no it can be destr royed विज्ञानवेत्ताओं ने अब यह स्पष्ट घोषणा की है कि जहाँ Material Cause नहीं होगा, वहाँ वस्तु की उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह वैदिक ग्रन्थों का वैदिक वैज्ञानिकों का सिद्धान्त अब यूरोप के वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है: नावस्तु वस्तुसिद्धिः न .....सांख्य दर्शन1/43 अर्थात् जो वस्तु कारण में नहीं है, वह कार्य में भी नहीं आ सकता।

इसे गीतों में इस प्रकार कहा गया है:

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।
उभयारपि दृष्टोऽत्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः।
।2/16

अर्थात् यदि कोई वस्तु वर्तमान नहीं तो उसका वर्तमान नहीं हो सकता तथा उपस्थित हो तो वह अनुपस्थित हो जाए, ऐसा नहीं हो सकता। इन दोनों तथ्यों का निर्णय तत्वदर्शियों अर्थात् प्रकृति तथा परमाणुओं का साक्षात्कार करने वाले विद्वानों ने किया है। जगत् के तीन कारण हैं– उपादान, निमित्त तथा साधारण कारण। इन्हें ही क्रमशः Material Cause, Effecient Cause तथा Formal Cause आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने अंग्रेजी में नाम दिए हैं। उपादान कारण का तात्पर्य है– जिसके बिना कुछ न बने। निमित्त कारण उसे कहते हैं– जिसके द्वारा बनाया जाए तथा न बनाने से न बने। स्वयं बने नहीं, दूसरे को बनाकर उसका प्रकार बदल दे। तृतीय कारण साधारण कारण का अर्थ उन साधनों से है, जो वस्तु के बनाने में प्रयोग में लाए जाते हैं। स्वर्ण से आभूषण बनते हैं। इसके बिना कोई स्वर्णकार आभूषण नहीं बना सकेगा। अतः इसे उपादान (=Material) कारण कहा जाता है। आभूषण स्वयं बन नहीं सकते। इन्हें स्वर्णकार ही बना सकता है। स्वर्णकार निमित्त (=Efficient) कारण माना जाता है परन्तु दुकान में स्वर्ण पड़ा हो, स्वर्णकार भी वहाँ उपस्थित हो, तब क्या बिना साधनों के आभूषण बन सकेंगे? ज्ञान, हाथ, आंख, प्रकाश, काल व अग्नि आदि भी स्वर्णकार को अपेक्षित हैं। वह इनके बिना आभूषण नहीं बना सकता। इन सब को साधारण (=Formal) कारण से अभिहित किया जाता है।

इस आधार पर यह संसार, यह सृष्टि या जगत् भी बिना कारण बन नहीं सकता था। विज्ञान वालों ने जिसे Matter माना है, वह प्रकृति है। वह नित्य है, साकार परन्तु अदृश्य है। साकार से ही साकार वस्तु उत्पन्न हो सकती है, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। परमेश्वर क्योंकि निराकार है, अतः परमेश्वर से सृष्टि उत्पन्न हुई मानना सर्वथा असत्य है। प्रकृति एक जड़ पदार्थ है। जड़ पदार्थ कोई भी हो, वह स्वयं कोई क्रिया नहीं कर सकता। प्रकृति सृष्टि का उपादान कारण है व परमेश्वर निमित्त कारण है अर्थात् जगत्/ सृष्टि परमेश्वर द्वारा प्रकृति से बनाई गई है। सृष्टि का अर्थ ही उस वस्तु से है जिसका निर्माण या सृजन किया जाता है।

इसके विपरीत कुरान (मं.1/सि.1/सू.2/आ.117) के अनुसार खुदा ही आरम्भ में था, शेष कुछ भी न था। वह आसमान और भूमि का उत्पन्न करने वाला है तथा उसे कुछ करना नहीं पड़ता। वह जो कुछ करना चाहता है, उसे कहता है– हो जा (=कुन) तो वह हो जाती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऐसा मानने वालों से पूछा है कि खुदा का 'हो जा' वाला आदेश किसने सुना तथा किसको सुनाया? कौन बन गया? किस कारण (= वस्तु) से बना? जब यह कहते हो कि खुदा के सिवाय अन्य कोई भी दूसरी वस्तु न थी तो यह संसार कहाँ से आया? बिना कारण कोई भी कार्य नहीं होता तो यह विशाल ब्रह्माण्ड बिना कारण कहाँ से हुआ? संसार तो विस्तृत है, विशाल है, तुम एक मक्खी की एक टांग भी बना कर दिखाओ।''

ईसाई भी बाइबल के अनुसार ऐसा ही मानते हैं तथा उनको भी यही उत्तर है। पौराणिकों का विचार यह है कि जैसे मकड़ी बाहर से कोई पदार्थ नहीं लेती, अपने में से ही तन्तु निकालकर जाला बना लेती है, ऐसे ही परमेश्वर अपने में से ही जगत् को बना लेता है। ऐसे लोगों को हमारा निवेदन है कि मकड़ी अपने शरीर में उपस्थित जड़ प्रकृति से बने जड़ पदार्थों से जाला बनाती है। अपने आत्मा में से वह कुछ पदार्थ निकालकर कुछ नहीं बना सकती। वह आत्मा निराकार है व निराकार से साकार वस्तु बन ही नहीं सकती। मकड़ी की आत्मा निमित्त कारण है तथा उसका शरीर जाला बनने का उपादान कारण है।

वस्तु के कारण व कार्य–इन दोनों को हम सही रूप में समझ लें तो संसार में प्रचलित अन्धविश्वास व कथित चमत्कार बहुत सीमा तक समाप्त हो सकते हैं। मुझे स्मरण है कि सन् 1972 के आस–पास सत्य साईं बाबा अपने कार्यक्रमों में दर्शकों को अपना एक हाथ घुमाकर सार्वजनिक रूप में अपने वस्त्रों के अन्दर से घड़ी, अंगूठी व भस्म निकालकर बांट देता था। दर्शक यह समझते थे कि अपने चमत्कार से यह घड़ियाँ व भभूति उत्पन्न कर देता है। तभी कर्नाटक विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति ने उसे चुनौती देते हुए पत्र लिखा था– ''आप मेरे यहाँ आकर रात्रि विश्राम करें। अगली प्रातः मेरे सामने स्नान करें तथा वस्त्र पहनें। मैं आपको अपने साथ कार में बिठाकर विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों, अधिकारियों एवं शिक्षकों के समक्ष ले जाऊँगा। आप अपना हाथ घुमाकर घड़ियाँ, अंगूठियाँ या भस्म निकाल दर्शकों को दिखाइए तथा बांटिए।'' बाबा यदि चुनौती स्वीकार कर लेता व सचमुच ही उपकुलपति के कहे अनुसार कार्य करता तो उसकी पोल खुल जानी थी क्योंकि वह अपने वस्त्रों के नीचे दाएं–बाएं कुछ घड़ियाँ, अंगूठियाँ व भस्म की पुड़ियाँ छिपाकर रख लेता था वस्त्र के एक स्थान को दबाने से बाहर स्वतः ही आ जाती थीं। ऐसी व्यवस्था उसने वस्त्रों के नीचे कर रखी थी। बिना उपादान, निमित्त व साधारण कारण के समझे व माने आम दर्शक यह नहीं सोचते कि बिना इन कारणों के घड़ियाँ बन सकती हैं तो घड़ियाँ बनाने के कारखाने बन्द क्यों नहीं होते? बिना स्वर्ण के यदि यह बाबा स्वर्ण की अंगूठियाँ बना लेता तो स्वर्णकारों का परिश्रम करना व्यर्थ है। यदि स्वर्ण न हो, स्वर्णकार व उसके साधन न हों तो अंगूठी बन ही नहीं सकती। ज्यों–ज्यों साईं बाबा की पोल खुलती गई त्यों–त्यों ऐसे 'चमत्कार' सतय साईं बाबा ने दिखाने बन्द कर दिए थे परन्तु 'दिव्य व चमत्कारी शक्तियां प्राप्त करके अद्‌भुत चमत्मकार दिखाने का दावा करने वाले बाबाओं की कमी अब भी नहीं है। बिना उपादान कारण जब परमेश्वर भी कुछ नहीं बना सकता तो कोई मनुष्य कैसे बना सकेगा?

चूना भट्ठियाँ, सिटी सेन्टर के निकट,
यमुनानगर (हरियाणा)

☞ *पृष्ठ 4 का शेष*

मानव की वरणीय...

आधार है।

मनुष्यसमाजमेंकोईछोटा–बड़ानहींहोता, न कोई जयेष्ठ, न कोई कनिष्ठ, सभी अपने सौभाग्य की वृद्धि के लिए भाई–भाइयों की तरह मिलकर प्रयत्नशील हों। वेद में कहा गया है– ''अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः ऐते सं भ्रातरो वावृधु सौभगाय'' ऋग्वेद 5.60.5. मनुष्य समाज में तीन प्रकार का अभाव देखा था, (1) ज्ञान का अभाव, इसे जो दूर करने का व्रत ले वह ब्राह्मण ब्रह्मज्ञान (2) न्याय का अभाव, इसे जो दूर करे वो क्षत्रिय (क्षतघाव, हानि), (3) आलम्बन पदार्थों का अभाव, भोजन, वस्त्र, आवास आदि। इन्हें समाज के लिये उत्पन्न करे तो वैश्य और (4) इन तीनों वर्गों की श्रम से सहायता करे तो वह शूद्र–आज की भाषा में चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी भारतीय संस्कृति में मानवता के नाते सभी बराबर के मनुष्य हैं।

परमेश्वर ने मानव जीवन को उत्थान, समृद्धि, संपन्नता के लिए बनाया है। स्रष्टा अपनी को विपन्न नही देखना चाहता। परमेश्वर वेद में आश्वासन देते हैं– ''उद्यानम् ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि''–हे मानव, तुम्हारा जीवन उन्नति के लिए है और तुम्हारे जीवन को दक्षता से संपन्न बना रहा हूँ। अवनति, विपन्नता मानव समाज की नियति नहीं है।

ऋषि कहते हैं– ''भोगापवर्गार्थं दृश्यं''– यह संसार परमेश्वर का दृश्य–काव्य है, वेद श्रव्य काव्य हैं। परमेश्वर ने इस संसार को भोगार्थ तथा अपवार्गार्थ (मोक्ष) बनाया है, बल्कि यों कहना चाहिए कि हेतु परमेश्वर ने भोग के द्वारा मोक्ष की साधना के लिए इस संसार को बनाया है। ''साधन धाम मोक्ष कर द्वारा'' इस संसार का कैसे भोग किया जाये यह भी वैदिक संस्कृति बताती है– '' ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्; तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्'' – यजुः 40/1 अर्थात् इस चलायमान संसार में जितने भी पदार्थ हैं सबमें परमेश्वर का निवास है (वस निवासे), सब परमेश्वर की छत्र–छाया में हैं। (वसु अच्छादने) भाव यह है। कि संसार में सभी पदार्थ परमेश्वर की छाया में हैं और परमेश्वर ने कृपा पूर्वक प्राणियों को भोग करने के लिए दे दिया है। इस संसार का कैसे उपभोग किया जाये यह भी अपनी संस्कृति बताती है। कहा है–''तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'' इसलिए त्यागपूर्वक भोग करो त्यागपूर्वक भोग में केवल उपभोग के द्वारा लाभ लेने की बात है, संचय करना,

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

जिन्हें हम भूल गये हैं

कुँवर सुखलाल 'आर्य मुसाफिर'

● डॉ. सहदेव वर्मा

कुँवर सुखलाल 'आर्य मुसाफिर' जैसा देश–भक्त, ओजस्वी वक्ता, मधुर गायक, समाज सुधारक, निर्भीक धर्म प्रचारक, और स्वाधीनता संग्राम में सर्वस्व न्यौछावर करने वाला व्यक्ति जिस देश में पैदा हो वह देश धन्य है, जिस समाज में हो वह समाज भाग्यशाली है, जिस संस्था में हो वह संस्था गौरवशाली है। जिस माँ की कोख से जन्म ले वह माँ सच्ची पुत्रवती है।

ऐसी ही थे कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफ़िर। जिन्होंने भारत और आर्य समाज की आन, बान, शान के लिये प्राणों को हथेली पर रख, आजीवन त्याग, सेवा और बलिदान को आदर्श मान, सीना तान, अपना मस्तक गौरव से ऊँचा कर जीवन–पथ की यात्रा पूरी की।

कुँवर सुखलाल जी का जन्म उत्तर प्रदेश में जिला बुलन्दशहर के अन्तर्गत एक छोटे से गाँव अरनिया में सन् 1890 में चौहान वंशीय राजपूतों में हुआ। आपके पिता ठा. भीम सिंह एक साधारण जमींदार थे।

उस समय गांवों में शिक्षा का प्रचार न के बराबर था। स्कूल के नाम पर कहीं–कहीं प्राथमिक स्कूल थे। जिनके न तो अपने भवन थे, न बालकों के बैठने के लिये फर्श। मेज कुर्सी का तो प्रश्न ही नहीं। अरनिया में भी स्कूल नाम की कोई संस्था नहीं थी। वहाँ से कुछ कोस की दूरी पर एक प्राइमरी स्कूल था, जहाँ मियाँ सरदार खाँ नाम के एक अध्यापक थे। वहीं कुँवर साहब की शिक्षा 'अलिफ़–बे' से शुरू हुई। अपको दो चीजें वरदान में मिली थीं– सुरीला कण्ठ और तीव्र स्मृति।

एक बार गुरुकुल सिकन्दराबाद के आचार्य पं. मुरारी लाल शर्मा अरनिया में आये तो उन्होंने कुँवर सुखलाल की प्रतिभा को पहचाना। वे उन्हें गुरुकुल में ले गये। गुरुकुलीय वातावरण में कुँवर साहब की प्रतिभा के पट खुलने लगे। परिश्रमी और बुद्धिमान तो थे ही विद्वानों का आवागमन भी गुरुकुल में लगा रहता था उनसे भी सम्पर्क हुआ। कुछ ही वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, रामायण, गीता तथा उपनिषदों का डटकर स्वाध्याय किया।

इसके बाद ये आगरा के 'मुसाफ़िर विद्यालय' के संस्थापक पं. भोजदत्त जी शर्मा के सान्निध्य में आये। यहीं से इनकी प्रचार यात्रा शुरू होती है। सन् 1896 में आर्य पथिक पं. लेखराम जी की एक मतान्ध मुसलमान ने छुरे से हत्या कर दी। पं. लेखराम जी के बलिदान ने आर्य–समाज के प्रचार की अग्नि में घी का काम किया।

पं. लेखराम जी के बलिदान के पश्चात् यह प्रचारात्मक कार्य पं. भोजदत्त जी शर्मा ने सँभाला। पं. भोजदत्त जी मिण्टागुमरी (पंजाब) में नहरवाही विभाग में सरकारी सर्विस में थे। सर्विस में रहते हुए ही इन्होंने वैदिक धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया। इस्लाम का खण्डन भी इनके प्रचार का अंग था। इससे मुस्लिम समाज भड़क उठा–और इनकी शिकायत विभाग के उच्चाधिकारी से कर दी जो एक अंग्रेज था। अफ़सर ने इन्हें बुलाकर सख्ती से कहा– 'पण्डित साहब, या तो भाषण–बाजी छोड़िये या फिर सर्विस।' भला दयानन्द के दीवाने भोजदत्त शर्मा को अफ़सर का यह लहज़ा कैसे सहन होता? उन्होंने तत्काल नौकरी से त्याग पत्र देकर आगरे की राह पकड़ी पं. और वहाँ लेखराम की स्मृति में 'मुसाफ़िर उपदेशक विद्यालय' खोल दिया। इस विद्यालय से दर्जनों विद्वान वैदिक धर्म की दीक्षा लेकर देश के विभिन्न भागों में प्रचारार्थ निकल पड़े। इसी मुसाफ़िर विद्यालय में कुँवर सुखलाल जी ने लगभग दस वर्ष तक नियमित रूप से आर्य समाज तथा वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा ग्रहण की।

पं. भोजदत्त जी ने अपने दोनों पुत्रों डॉ. लक्ष्मीदत्त 'आर्य मुसाफ़िर' तथा पं. तारादत्त 'आर्य मुसाफ़िर' के साथ कुँवर सुखलाल को भी 'आर्य मुसाफ़िर' नाम देकर इन्हें तीसरा पुत्र मान अपने परिवार का अभिन्न अंग बना लिया। 16–17 वर्ष की आयु से ही इन्होंने प्रचार कार्य आरम्भ कर दिया था। कुँवर साहब का लहराता स्वर और वक्तृत्त्व कला श्रोताओं पर अमिट छाप छोड़ती थी। कुँवर साहब की मनमोहक शैली के कारण इनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गई और देश भर में इनके व्याख्यानों की माँग होने लगी।

22–23 वर्ष की आयु में कुँवर साहब प्रचारार्थ पेशावर पहुँचे। वहाँ हिन्दू–संगठन और अछूतोद्धार पर विशेष बल दिया। एक दिन उन्होंने अपने भाषण में कहा 'हिन्दू लोग कुत्तों और बिल्लियों के साथ तो प्यार करते हैं पर अपने भाइयों भंगी चमारों को अछूत कह कर उनसे घृणा करते हैं।' गुप्तचर विभाग ने अपनी रिपोर्ट में धूर्ततावश लिखा– कि 'सुखलाल ने कुत्ते और बिल्ली ईसाई और मुसलमानों को कहा है।'

पुलिस ने त्वरित कार्यवाही कर इन्हें गिरफ्तार करके इन पर तौहीने मजहब (धर्म का अपमान) का अभियोग दायर कर दिया। पेशावर का कोई भी वकील (भय के कारण) इनके मुकदमे की पैरवी करने को तैयार न हुआ। आखिर कुँवर साहब खुद ही अपने मुकदमे की पैरवी करने के लिये तैयार हुए।

यथासमय अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने पेशी हुई। ट्रेन्ड किये हुए गवाह ने अपने बयान में कहा– 'हजूर, इन्होंने मेरे सामने यह कहा था कि हिन्दू लोग कुत्तों और बिल्लियों से मोहब्बत करते हैं।' कुत्ता और बिल्ली इन्होंने मुसलमानों और ईसाइयों के लिये ही कहा था। जिरह में कुँवर साहब ने गवाह से पूछा– 'जब मैंने कहा था कि हिन्दू लोग कुत्तों और बिल्लियों से मुहब्बत करते हैं तब इस फिकरे के साथ मैं हारमोनियम बजा रहा था कि नहीं? और मेरे साथ वाला ढोलक बजा रहा था कि नहीं?' गवाह ने जवाब दिया– 'आप बराबर हारमोनियम बजा रहे थे और ढोलक वाला बराबर ढोलक बजा रहा था।'

कुँवर साहब ने मजिस्ट्रेट से मुखातिब होकर कहा, 'जनाब मजिस्ट्रेट साहब! यह फिकरा जिसके लिये मुझे दोषी करार दिया जा रहा है लैक्चर में तो कहा जा सकता है, म्यूजिक में नहीं। हारमोनियम और ढोलक म्यूजिक में ही बजते हैं लैक्चर में नहीं। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि यह केस झूठा बनाया गया है। मैं पूरी तरह निर्दोष हूँ।'

मजिस्ट्रेट ने कुँवर साहब को बरी करते हुए कहा 'मि. सुखलाल आगरा पेशावर से सैकड़ों मील दूर है, फिर तुम इतनी दूर प्रचार करने क्यों आया है?' कुँवर साहब ने फौरन जवाब दिया 'मजिस्ट्रेट साहिब आगरा हिन्दुस्तान में है और पेशावर भी हिन्दुस्तान में है (तब पाकिस्तान नहीं बना था) पर आपके ईसाई पादरी तो हजारों मील दूर, सात समन्दर पार कर गैर मुल्कों और हिन्दुस्तान में प्रचार करने आते हैं। मैं तो अपने ही देश में हूँ, फिर इसमें गैर मुनासिब क्या है?'

मजिस्ट्रेट के पास इस तर्क का कोई जवाब नहीं था। फिर भी उसने कहा, 'मि. सुखलाल, आपके लैक्चरों से यहाँ अमन में खलल पड़ने का अंदेशा है इसलिये पुलिस आपको फ्रन्टियर से बाहर पहुँचा देगी। 'इसके बाद पुलिस उनको आगरा छोड़ आई।

अगले वर्ष कुँवर साहब प्रचार के लिये मुलतान गये। वहाँ भी इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, क्योंकि सरकार की दृष्टि में इनका प्रचार आपत्तिजनक था। इन्हें पुनः आगरा भेज दिया गया। अब इनका कार्यक्षेत्र विशेष रूप से उत्तर प्रदेश ही हो गया।

कुँवर सुखलाल जी प्रचारार्थ जिला जालौन (यू.पी.) के कोंच नामक कस्बे में आर्य समाज के उत्सव में गये थे। वहाँ इनके प्रभावशाली भजनोपदेशों से मुस्लिम समाज में खलबली मच गई। रात्रि में उत्सव समाप्त होने पर लगभग एक बजे समाज के कुछ सदस्यों के साथ वे अपने निवास स्थान की ओर जा रहे थे। रास्ते में मुस्लिम समाज के कुछ सशस्त्र गुण्डों ने उन पर प्राणघातक आक्रमण कर दिया, उनका सिर फट गया– वे लहूलुहान हो गये और बेहोश होकर गिर पड़े। मुस्लिम गुण्डे उन्हें मरा समझ कर, भय के कारण भाग गये और साथ वाले लोग भी भयभीत होकर भाग खड़े हुए। सबेरे घटना का पता चलने पर लोग उन्हें बेहोशी की हालत में उठाकर ले गये–अस्पताल में दाखिल कर उनका इलाज कराया गया। कुछ स्वस्थ होने पर लगभग एक सप्ताह पश्चात् सिर में घावों पर पट्टी बंधी हुई थी, शरीर में काफी दुर्बलता भी थी। ये फिर उसी नगर में एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करने जा पहुँचे। अपनी गरजती आवाज में दहाड़ते हुए जोशीला भाषण देकर भजन भी प्रस्तुत किया–

'मुझे मारकर वे मेरा क्या करेंगे?
मैं फ़ानी नहीं हूँ फना क्या करेंगे।
हथेली पै जो सिर लिये फिर रहा हो,
वे सर उसका धड़ से अलग क्या करेंगे?'

कुँवर साहब की इस वीर रस से ओत प्रोत कविता को सुनकर जन समुदाय रोमांचित हो उठा, और लोगों की आँखों से आँसुओं की अजस्र धारा बह चली। ऋषि दयानन्द और वैदिक धर्म के जयकारों से सारा आकाश गूँज उठा। उस समय आर्य जनों का जोश और उत्साह देखते ही बनता था।

समय बीतता गया और कुँवर सुखलाल जी के प्रचार का दायरा भी बढ़ता गया। आर्य समाज के उत्सवों में कुँवर साहब की उपस्थिति उत्सव की सफलता की गारन्टी मानी जाती थी। इधर सन् 1919 में रौलट एक्ट और जलियाँ वाले बाग के अमानुषिक हत्या काण्ड से सारा देश और विशेष रूप से पंजाब धधक उठा। गाँधी जैसा शान्ति प्रिय व्यक्ति भी, जो कभी अंग्रेजी शासन का हिमायती था, ब्रिटिश हुकूमत का घोर विरोधी बन गया। अब भारतीय कांग्रेस

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

☞ पृष्ठ 7 का शेष

कुँवर सुखलाल...

भी भिखमंगी मुद्रा वाली कांग्रेस नहीं थी। तिलक जी का नारा– 'हम भारत के और हमारा भारत प्यारा–स्वतंत्रता है जन्मसिद्ध अधिकार हमारा।' जन–जन के गले का हार बन चुका था।

ध्यान देने की बात यह है कि ऋषि दयानन्द ने तो 1875 में ही डंके चोट पर यह घोषणा की थी कि 'विदेशी शासन चाहे माता–पिता के समान भी प्रिय क्यों न हो, वह स्वदेशी शासन के तुल्य कदापि नहीं हो सकता।' ऋषि ने तो स्थान–स्थान पर स्वराज्य एवं चक्रवर्ती साम्राज्य की बात कहकर आर्यों के स्वाभिमान तथा स्वदेशाभिमान को जगाने का भी सफल प्रयत्न किया है। यद्यपि आर्य समाज की नींव सांस्कृतिक, सामाजिक तथा वास्तविक धार्मिक आधार पर स्थित है, किन्तु राष्ट्रीयता एवं स्वदेश प्रेम की भावना को भी ऋषि एवं उसके अनुयाइयों ने कभी आँखों से ओझल नहीं किया। वेदों में अनेक स्थानों पर राष्ट्रीयता स्वराज्य आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। वेद में 'यतेमहि स्वराज्ये' के साथ 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' जैसे उद्‌बोधन भी हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि स्वराज्य तो आर्य समाज की रग–रग में व्याप्त है।

1920 ई. में कांग्रेस की बागडोर गाँधी जी के हाथों में आ चुकी थी। उन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। फिर कुँवर सुखलाल जैसा व्यक्ति कैसे पीछे रह सकता था? अब तक तो 'आर्य मुसाफिर' आर्य समाज के मंच से ही जन जारण का संदेश प्रचारित कर रहे थे। जब कांग्रेस की सभाओं का द्वार भी जंगे आजादी के लिये उन्मुक्त हो गया।

ऋषि दयानन्द की परोक्ष प्रेरणा और म. गाँधी का प्रत्यक्ष मार्ग दर्शन 'सोने में सुहागे' का कार्य कर रहा था। अब तो कुँवर साहब ने गली, कूचों, उत्सवों और सभाओं में ये तराने गाने शुरू कर दिये–

दयानन्द ने गर जगाई न होती,
तो बेदार हरगिज़ खुदाई न होती।
न सुनने को मिलते वतन के तराने,
अगर देशभक्ति सिखाई न होती।।

कुँवर सुखलाल जी की वाणी में ऐसा जादू था कि लोग इन्हें सुनने के लिये घंटों बैठे रहते थे। जन जागृति का संदेश देकर, स्वतंत्रता की लहर पैदा करने की इनमें अद्‌भुत क्षमता थी। इनकी प्रचारात्मक गतिविधि से सरकार बौखला उठी। 1920 में बन्दी बनाकर इन्हें नौ मास का कठोर कारावास तथा पाँच सौ रुपये जुर्माने का दण्ड दिया गया। जुर्माना न देने पर इनके घर का सब सामान कुर्क कर नीलाम कर दिया गया। यहाँ तक कि चाकी, चूल्हा, खाट, पीढ़ी, बर्तन, भाण्डे, ढोर, डंगर, सब कुछ पुलिस ने उठा लिया। आत्म सम्मान की रक्षा के लिये यह इनकी तीसरी जेल यात्रा थी।

जेल से छूटते ही कुँवर साहब ने फिर धुँआधार प्रचार शुरू कर दिया। चाहे आर्य समाज का मंच हो या कांग्रेस की सभा इनकी तो एक ही रट थी–

'नौजवानों! वक्त है मिट जाओ कौमी आन पर, देखना बट्‌टा न लग जाये वतन की शान पर।

आराम तलबी छोड़ दो प्यारा वतन खतरे में है, नौ–जवानों सोचना क्या, खेल जाओ जान पर।।'

आग उगलने वाली इन नज़्मों को सुनकर जनता हुँकार उठती थी तथा भारत माता की जय, म. गाँधी की जय के नारों से आकाश गूँजने लगता था। 1922 के शुरू में राजद्रोह के अपराध में इन्हें फिर गिरफ्तार कर एक वर्ष की जेल और पाँच सौ रुपये का जुर्माना हुआ। इस बार भी जुर्माना न देने पर घर का सामान नीलाम कर दिया गया। वैसे अब घर में था ही क्या? घर की स्थिति बद से बदतर हो गई। रोटी के लाले पड़ गये। लेकिन वाह रे सुखलाल! कभी किसी से इसका ज़िकर तक नहीं किया। घर का प्रबन्ध जैसे–तैसे गाँव वाले ही कर देते थे। पत्नी और बच्चे घर में भी बनवासी ही थे। पर किसी के आगे हाथ फैलाना उन्हें गवारा न था।

शायद आप सोचते हों कि इतना प्रभावशाली व्यक्ति न जाने कैसा हृष्ट पुष्ट तथा बलशाली रहा होगा। तो देखिए–कद पाँच फुट, शायद कुछ कम भले ही हो, दुबला पतला शरीर, चौड़ा सपाट उभरा माथा, गेहुआँ रंग, आँखों पर चश्मा पर दृष्टि में अद्‌भुत आकर्षण, स्वर में मेघ सम गर्जन, कम से कम दो ढाई घंटे धारा प्रवाह बोलने की क्षमता, तन पर खादी की धोती कुर्ता जाकट, पैरों में साधारण चप्पलें। संक्षेप में कहें तो ग्रामीण वेश–भूषा, खान–पान में लापरवाही जो भी रूखा–सूखा मिल जाए। समय की कोई पाबन्दी नहीं। पचास हजार की भीड़ में भी अंतिम व्यक्ति तक आवाज को पहुँचाने में सक्षम (उन दिनों लाउड स्पीकर का प्रचार नहीं था) यह है उस व्यक्ति का व्यक्तित्त्व जिसका नाम सुनकर लोग अपना काम–काज बन्द करके उसके व्याख्यानों को सुनने के लिये दौड़े चले आते थे। वह दयानन्द का दीवाना और आजादी का मतवाला 'आर्य मुसाफिर' ऐसी आग का गोला था जिसकी आँच से न केवल ब्रिटिश हुकूमत बल्कि मतान्ध मुसलमान, साधन सम्पन्न ईसाई प्रचारक, पाखण डी पुरानत पन्थी पण्डे भी झुलस उठते थे।

1923 के अन्त में जैसे ही कुँवर साहब जेल से मुक्त हुए, आर्य समाज के एक उत्सव में केवल एक ही भाषण दिया था जिसमें अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा था फिर भी कुछ नकली पेशेवर गवाह बनाकर धारा 108 के अन्तर्गत फिर एक साल की सजा दे दी गई। अब तो कुँवर सुखलाल 'आर्य मुसाफिर' का जेल के साथ चोली दामन का साथ हो गया था। अब इनके लिये जेल–जेल न रहकर 'कृष्ण–मंदिर' बन गई थी। वहीं तसला बजाते, भारत माता और दयानन्द के गीत गाते और समय बिताते थे।

जिस समय कुँवर साहब जेल में बन्द थे, उसी समय आगरा, मथुरा, भरतपुर आदि स्थानों पर मलकाने राजपूतों शुद्धि का कार्य आर्य समाज की ओर से जोर–शोर से चल रहा था। आर्य समाज के अधिकांश नेता और कार्यकर्ता इसी कार्य में लगे हुए थे। तभी प्रचारार्थ कुँवर साहब की आवश्यकता महसूस की गई। इसलिए उन्हें जमानत पर जेल से बाहर निकलवा कर प्रचार कार्य में लगाया गया। बाहर आते ही कुँवर साहब ने ताबड़तोड़ प्रचार शुरू कर दिया। इनके प्रचार से उस सारे क्षेत्र में धूम मच गई। सैकड़ों की संख्या में स्त्री–पुरुष, बच्चे बूढ़े, जत्थे बना बना कर इनके भजन और व्याख्यान सुनने के लिये आने लगे। कुछ समय पूर्व प्रसारित भय का वातावरण सौहार्द्र में परिवर्तित होने लगा। तबलीगी मुल्ला, मौलवी, ढीले पड़ गये। इधर कुँवर सुखलाल जी भी अपनी रंगत में आकर तरन्नुम में गाने लगे–

"इधर हम शुद्धि करने के लिये तैयार बैठे हैं।
उधर मुल्ला मियाँ अकड़े हुए बेकार बैठे हैं।।
बहुत सी हो चुकी शुद्धि हजारों होती दिन पर दिन।
दीने इस्लाम का हम तो दिवाला काढ़ बैठे हैं।"

कुछ हितैषियों ने कुँवर साहब को समझाया कि ज्यादा सख्ती से प्रचार को बचाएँ पर वे तो बेख़ोफ होकर अपने तर्जे बयाँ को धार दे रहे थे। भला दयानन्द का दीवाना सच्चाई के मार्ग से क्या तनिक भी विचलित हो सकता है? उन्होंने तो और जोर से पुकार लगाई–

"अब तो वैदिक धर्म की फिर से बहार आने को है।
अब कुरां का पार्सल सीधा अरब जाने को है।।"

ऐसे तराने सुनकर कौम ने अंगड़ाई ली। कुछ दिन पहले जहाँ दुर्बलता के लक्षण दिखाई दे रहे थे, वहाँ अब नव जीवन का संचार होने लगा। सच तो यह है कि जब मुसाफिर सफर के लिये कमर कस लेता है तो (राही के लिये) राह सुगम हो ही जाती है।

क्रमशः

शेष अगले अंक में.....

24/4 बिशन स्वरूप कालोनी, पानीपत

☞ पृष्ठ 6 का शेष

मानव की वरणीय...

स्वत्व जताना, मालिक बनना आदि नहीं है। त्यागपूर्वक भोग का एक सुन्दर उदहारण है– रेलगाड़ी की यात्रा। रेलगाड़ी सुंदर है, डिब्बा भी सुंदर है साथी, सहयात्री, सभी संदर भले हैं, किन्तु गंतव्य स्टेशन पर सबका त्याग करके उतर जाना त्यागपूर्वक भोग है। न गाड़ी अपनी है, न डिब्बा अपना है और न तो बहार के सुन्दर दृश्य अपने हैं, सबका त्याग ही अभीष्ट है– ''किसकी रेलगाड़ी और कौन रेलगाड़ी का'', ''त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथाः''। यह भी आशय है कि 'तेन परमेश्वरेण त्यक्तेन प्रसादरूपेण प्रयक्तेन भुञ्जीथाः' अर्थात् संसार के भोगों को परमेश्वर का प्रसाद मानकर भोग करें जैसे प्रसाद में कोई आसक्ति या लोभ–लालच नहीं होता, उसी प्रकार संसारी पदार्थों में स्वत्व, आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। संसार में स्वत्व, ममत्व, आसक्ति, अधिकार, मालिकाना की भावना ही संसार में अशांति, वैर और विपत्ति का कारण है। श्री दिनकर जी ने ठीक ही कहा है – ''छीन–छीन जलथल की थाती, संस्कृति ने निज रूप समाया; विस्मय है, तो भी न शांति का दर्शन एक पलक को पाया'' संचय, लोभ, परिग्रह की भावना ही मनुष्य को मनुष्य से, देश को देश से, राष्ट्र को राष्ट्र से अलग करती है एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर अधिकार करने के लिए अस्त्रों–शस्त्रों का संग्रह करता है और संसार में विभिन्न देशों में युद्ध होते हैं, विश्व–युद्ध भी होते हैं।

भारतीय संस्कृति का उपदेश है – ''मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम; मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'' को सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। यह मेरा है, यह मेरा नहीं है, दूसरे का है, यह स्वार्थी क्षुद्र दृष्टि है। ''उदार चरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्''–उदार चरित्र पुरुषों के लिए सम्पूर्ण संसार एक कुटुंब है। ''तत्र विश्व भवत्येक नीडं'' सारा संसार एक परिवार है, प्राणीमात्र परमेश्वर की संतान है और परमेश्वर सबका पिता है, पालक, रक्षक है।

ईशावास्यम्

P-30 **कालिन्दी, कोलकाता–89**

पूर्वी लद्दाख सीमा पर चीनी अतिक्रमण

1962 के परिदृश्य की वापसी

● हरिकृष्ण निगम

आज पूर्वी लद्दाख के देबसांग नामक ऊंचे मैदानी क्षेत्र में भारतीय सीमा के 18 किलोमीटर अन्दर सैकड़ों सशस्त्र चीनी सैनिक टेन्टों के बड़े शिविरों में 15 अप्रैल 2013 से ही जमे बैठे हैं। जब हमारा देश सो रहा था या उन छिटपुट खबरों को भी नकार रहा था इतना बड़ा अतिक्रमण उन्होंने पहली बार वास्तविक नियंत्रण सीमा के भारतीय ओर शिविर स्थापित कर पूरे दुस्साहस के साथ किया है। जिस समय भारतीय–तिब्बत सीमा पुलिस (आई.टी.बी.पी.) के जवान दूसरे क्षेत्र में अपनी कवायद में लगे थे चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी बुर्त्से और दौलत बेग ओल्दी पर कब्जा कर चुकी थी। कहते हैं कि हमें पहली बार 16 अप्रैल 2013 को एक हवाई सर्वेक्षण में यह सत्य ज्ञात हुआ कि वहाँ अच्छी संख्या में चीनी सैनिक जमे हुए थे। भारतीय टुकड़ी के मात्र 500 मीटर की दूरी पर आमने–सामने आने पर भी यह विस्मय की बात है कि यह सब भारतीय सीमा रेखा के भीतर ही हुआ है। यह सब मात्र अकेला अतिक्रमण नहीं है बल्कि अलग अलग जगहों पर कई बार हो चुका है जबकि हमारी सरकार अपने विरोधाभासी दिग्भ्रमित करने वाले वक्तव्यों को दोहरा रही है।

उलटे आज चीनी सेना के अधिकारी भारतीय सेनाओं को अपनी सुरक्षा चौकियों को नष्ट कर पीछे हटें, ऐसी माँग है क्योंकि वे पूर्वी लद्दाख की वर्तमान सीमा को विवादित मानते हैं। सेना के दो जनरलों की दो फ्लैग मीटिंग असफल रहीं और तीसरी होने वाली मीटिंग में क्या होगा, कोई नहीं जानता। विदेश मंत्री हताशा से मुंह चुराते हुए मई 2013 में ही चीन जाने की तैयारी कर कुछ रास्ता निकाल पाएंगे, कुछ कहा नहीं जा सकता।

सच तो यह है कि अरसे से इसी सीमा पर चीनी टुकड़ियाँ घुसपैठ कर रही थीं, उनके हेलीकाप्टर वहां उड़ते थे, उनकी संचार प्रणाली भारत के मुकाबले में अत्यन्त सुचारु और व्यवस्थित थी और चीनी अपनी सीमा तक बख्तरबंद गाड़ियों और टैंकों को लाने के लिए पक्की सड़कें बना चुके थे।

जहां तक चीन की युद्ध की गतिविधियां चलते समय भी भारत की प्रतिरक्षात्मक क्षमता की हमारी कलई आज के जैसे संवेदनशील प्रकरणों ने खोल दी है। चीन ने खुलकर लद्दाख में सीमा का उल्लंघन किया है भारत के विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और सभी सम्बन्धित केन्द्रीय मंत्री अरसे से रट लगा रहे हैं कि चीन से निकट भविष्य में कोई खतरा नहीं है। दोनों देशों की सीमा के मामलों में 1962 में कृष्ण मेनन जैसे साम्यवादियों से मिलकर चीन के तुष्टीकरण की नीति अपना रहे थे आज वैसा ही कुछ निर्लज्जता से दोहराया जा रहा है। अभी इसी अप्रैल 2013 के प्रारंभ में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री हरीश रावत कह रहे हैं कि चीन द्वारा निर्मित बांधों से कोई खतरा नहीं है–इस सम्बंध में चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं। पिछले महीनों में विदेश मंत्री और अन्य केन्द्रीय मंत्री चाहे हमारे उद्योगपति हों या जनता उन्हें आश्वस्त करते हुए अंधेरे में रखकर चीन के मन्तव्य की व्याख्या करने में जुटे हैं। क्या पिछले घटनाक्रमों की तरह वे भी राष्ट्रद्रोही कहलाने के लिए तैयार होंगे जब पानी सिर से ऊपर चला जाएगा। चाहे चीनी सेना की गश्त की सीमा पर गाड़ियां हों या भारत की सीमा से जुड़ी सड़कों का जाल हो या सारे अरूणाचल प्रदेश को अपने मानचित्र में बताकर वह सीमा विवाद को हवा देता रहा हो–पहले भारत सरकार इसका खण्डन करती है फिर स्वीकार कर लेती है। यह कहने की बात नहीं है कि चीन पर विश्वास करना आत्मघाती कदम होगा। सारी दुनियां के सुरक्षा विशेषज्ञ लिखते रहे हैं कि चीन की कूटनीतिक चालों में वह पाकिस्तान को सैन्य सहायता के अतिरिक्त रणनीतिक साजिशों में भी शामिल करता रहा है। वह अपनी घृणा में दूरदर्शी है जब कि हम भ्रम में जीने के आदी हैं। सारा पश्चमी मीडिया हमें चेतावनी दे चुका है कि चीन ने अपने संसाधनों से भारतीय सीमा से सटे मार्गों पर रेल सेवा की भी तैयारी की है। लम्बी नींद के बाद सत्तासीन कांग्रेसी नेतृत्व को अब कदाचित आगामी संकट का अहसास सहसा होने लगा है। भारतीय सीमा जो लगभग 4057 किलोमीटर चीनी नियंत्रण रेखा के समानान्तर है, वहां चीन की सैन्य संरचना की व्यापक तैयारियों को देखते हुए हम अभी भी बहुत पिछड़े हुए हैं। यह एक क्रूर और अकल्पनीय विडम्बना है कि विदेश मंत्री का यह वक्तव्य कि या यद्यपि नियंत्रण रेखा की यह बड़ी घुसपैठ गम्भीर तो है पर इसका असर चीनी प्रधान मंत्री की अगली वो होने वाली भारत यात्रा पर नहीं पड़ना चाहिए। चीनी प्रधानमंत्री कियांग की प्रस्तावित यात्रा और सलमान खुर्शीद की चिन्ता को हमारे अंग्रेजी समाचारपत्रों ने हाल में चार कालमों की सुर्खियों में व्यक्त किया है। परस्पर व्यापक वाणिज्यिक हितों का ढोंग का अभी भी कुछ अंग्रेजी समाचारपत्र ढोल पीट रहे हैं।

जिस तरह से चीन में भूतकाल ने विवादित सीमा के नाम पर जब हमारी भूमि को हड़पना शुरू किया था, हमारी बड़ी नदियों के स्रोतों के पास बड़े बांध बनाकर वह एक नए आगामी युद्ध को आमंत्रित कर रहा है। जल संसाधनों की साझेदारी में चीन विश्वास नहीं करता है और इस प्राकृतिक संसाधन को वह राजनीतिक उपकरण बनाना चाहता है। भारत पर चीन एक साजिश की तरह दबाव डालने में सबसे आगे है कि हम पाकिस्तान व बांगलादेश से नदियों के पानी की साझीदारी करें पर वह स्वयं ब्रह्मपुत्र व तिब्बत से या नेपाल होकर भारत में बहनेवाली नदियों के प्रवाह में बांधों का समर्थक बन बैठा है।

सच देखा जाए तो चीन और पाकिस्तान ने भारत को एक असहाय देश बना दिया है जहां एक याचक की तरह सीमा रेखा प्रश्न पर 'स्टेटस क्वो' (यथास्थिति) की मांग दोहराने के अलावा हमारे पास विकल्प ही नहीं बचा है। तिब्बत की स्वतंत्रता की बात का संकेत देने का भी हमारा साहस तिरोहित हो चुका है। भारतीय सेना बड़ी संख्या में वहां सैन्य बलों को भेजने में भी डरती है क्योंकि वही चीन भारत को क्षेत्रीय तनाव बढ़ाने का दोषी कहना प्रारंभ करेगा। 1999 के कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी सैन्य बलों के अतिक्रमण के बाद से पहली बार अब चीन ने अपने शक्ति प्रदर्शन द्वारा भारत को असमंजस में डाला है। एक समाचार के अनुसार दोनो देशों के बीच गोपनीय 'राजनयिक चैनलों के बिचौलिए' इस ज्वलनशील स्थिति को सुलझाने में जुटे हुए हैं। जिस तरह एक बार पहल 1986 में 'आपरेशन फ़ाल्कन' द्वारा चीन के ''असामान्य आचरण'' द्वारा किए गए अतिक्रमण को सुलझाने के लिए कुछ देशों की सहायता ली गई थी, आज फिर वैसा ही कुछ हो रहा है। चीन अपने कदम के लिए इसलिए आश्वस्त है कि वह भारत के विभाजित नेतृत्व की स्थिति भी समझता है जहां देश की सम्प्रभुता से अधिक सत्ता की गद्दी बहुधा महत्वपूर्ण मानी जाती रही है।

जिस देश में कथित महत्वपूर्ण अंग्रेजी दैनिक जैसे टाइम्स ऑफ इण्डिया, इण्डियन एक्सप्रेस या एशियन एज यदि अपने सम्पादकीय अथवा अग्रलेखों में लिखें कि ''चीनी गुत्थी परिष्कृत राजनयिक स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रीय साझेदारी द्वारा अभी भी वार्ता से सुलझाई जा सकती है'', शक्ति प्रदर्शन से नहीं, उस देश का भगवान ही रक्षक है ! जहां चीन आज अपने सुरक्षाबलों को अपनी पुनः परिभाषित वैश्विक भूमिका के अनुरूप बना रहा है, हम केवल सुरक्षा सौदों के भ्रष्टाचार पर ही बहस कर सकते हैं

ए–1002 पंचशील हाईट्स
महावीर नगर, कान्दिली (प), मुम्बई–67

चुनाव समाचार

आर्य समाज ग्रीन पार्क, नई दिल्ली

प्रधान	स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती
मन्त्री	श्री वीरेन्द्र जी अरोड़ा
कोषाध्यक्ष	श्री प्रेम प्रकाश जी सब्बरवाल

पत्र/कविता

ईश्वर के गुण गाते हैं

आओ मिलकर हम सब ईश्वर के गुण गाते हैं।
परम पिता परमात्मा के सामने अपना शीश झुकाते हैं।।

पाषाणों के पूजन अर्चन में न अपनी भक्ति दिखाते हैं।
वेदों में जो विधि बताई उसे ही अपनाते हैं।।
आओ मिलकर हम उस शिव की स्तुति गाते हैं।
परम पिता परमात्मा के सामने अपना शीश झुकाते हैं।।

नवीन वेदान्ती, सिद्धान्ती शास्त्रार्थ में हरा न पाते हैं।
वैदिक विद्वानों की बुद्धि महान् है ना नस्तिक आस्तिक बन जाते हैं।।
ईश्वर की उपासना कर, जीव मुक्ति पाते हैं।
परम–पिता परमात्मा के सामने अपना शीश झुकाते हैं।।

परम प्रमाण कौन है, निर्णय ये कर न पाते हैं।
खोज–विचार के पश्चात् वेद को प्रमाण पाते हैं।।
वेदों का अध्ययन कर, सत्य विद्या को पाते हैं।
परम पिता परमात्मा के सामने अपना शीष झुकाते हैं।।

ब्राह्मण जात–पात से नहीं, अपनी बुद्धि से होता है।
क्षत्रिय जन्म–जात नहीं, शक्तियुक्त होने से होता है।।
वर्णानुसार कर्म कर के, उन्नति वे कर पाते हैं।
परम पिता परमात्मा के सामने अपना शीष झुकाते हैं।

गान कर इस सुन्दर कविता का, वेदभक्त बन जाते हैं।
वेदभक्त बन के वे फिर महापुरुष बन जाते हैं।।
आओ मिलकर हम सब ईश्वर के गुण गाते हैं।
परम पिता परमात्मा के सामने अपना शीश झुकाते हैं।

शिवांक वर्मा
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
एन.आई.टी.कैम्पस
आदित्यपुर

विश्व आर्य समाज प्रतिनिधि सभा

देश में कई वर्षों से, सक्रिय आर्य नेतागण राज्य स्तर पर और सार्वदेशिक स्तर पर समानान्तर सभाएँ चला रहे हैं और विवाद कोर्ट कचहरियों में चलाकर अपनी शक्ति व्यर्थ में गवां रहे हैं। इससे आर्य समाज की प्रतिष्ठा भी कम हो रही है।

मेरी उन्हें सलाह है कि वे समानान्तर सभाएं न चलाएं। उसे भंग कर दें और उसकी जगह राज्य स्तर पर और अखिल विश्व स्तर पर "विश्व आर्य समाज प्रतिनिधि सभा" के नाम से कार्य करें। इससे जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा और आर्य समाज का कार्य बढ़ेगा।

आई. डी. गुलाटी
सदस्य आर्य समाज
चौक बाजार
बुलन्दशहर

****

भारतीय लोकतंत्र के भविष्य को खतरे की चेतावनी

दुनियां के विशाल लोकतंत्र भारत देश में केवल सत्ता की मौजमस्ती हथियाने की खातिर गठबन्धन विभिन्न राजनेतिक दलों में उथलपुथल होना समय समय पर वो भी देश में लोकसभा के आम चुनावों को नजदीक देखते हुये यह सब भारतीय "लोकतंत्र" के भविष्य के लिये बेहद खतरनाक साबित हो सकती है।

देशबन्धु
सन्तोषपार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली–110059

****

जय घोषों की भरमार

आर्य समाज में शान्ति पाठ के बाद जय घोषों की जनसंख्या की तरह वृद्धि हो रही है। मैं बचपन से ही आर्य समाज में जा रहा हूँ। पहले जो बोले सो अमय–वैदिक धर्म की जय महर्षि दयानन्द की जय/ आर्य समाज अमर रहे। वेद की ज्योति जलती रहे। ओम का झण्डा ऊँचा रहे। वैदिक ध्वनि ओ३म्... वैदिक अभिवादन नमस्ते, सबको अब तो धीरे–धीरे बढ़ते जा रहे है। श्रीराम, श्रीकृष्णा की जय गुरू विरजानन्द की जाय गौ–माता की जय (बन्द करके) रक्षा करे। सत्यार्थ प्रकाश अमर रहे जबकि सत्यार्थ प्रकाश को कमी पढ़ा नही। पौराणिक भाईयों को खुश करने के लिये उन से दो नोरेले लिये।

प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो। मैंने कहा भाई सिक्ख भी अपने हिन्दू भाई हैं। उन्हें क्यों नाराज करते हो। गुरू नानक देव, गुरू गोविन्द सिंह की भी जय बोला करो।

देवराज आर्य मित्र

****

हिन्दी–प्रेम

हमारे पड़ोसी देश नेपाल से जो वाहन भारत आते है उन पर परिवहन नम्बर सदैव हिन्दी में लिखे मिलेगे? यह परम्परा हमारे देश में क्यो नहीं? नेपाल की सरकार का हिन्दी प्रेम सराहनीय है। नेपाल वासी को हार्दिक बधाई।

कृष्णा मोहन गोयल
113–बाजार मोर
अमरोहा 244221

****

जो लोग यज्ञोपवीत पहने रहते हैं उन्हें ही पहनाना चाहिए

मेरे विचार में जो लोग यज्ञोपवीत उतार देते हैं उन्हें जबरदस्ती क्यों पहनाया जाये? परन्तु मैली तो कोई नहीं उतारता। इसलिये शुभ कार्य के अवसर पर मौली बांधने में क्या बुराई है और माथे पर तिलक लगाना भी ग़लत नहीं है। महर्षि दयानन्द ने माथे पर उल्टे सीधे तिलक लगाने की ही आलोचना की थी जो शैव और वैष्णव लोग अन्ध विश्वास के कारण लगाते हैं। आर्य लोग रक्षाबन्धन तथा भाई दूज के अवसर पर बहिनें अपने भाईयों के तिलक लगाती हैं अगर सब शुभ अवसरों पर माथे पर साधारण तिलक लगाया जाये तो मेरे विचार में कोई बुराई नहीं है, आर्य समाज को बिना कारण ही सब परम्पराओं का विरोध नहीं करना चाहिए।

अश्विनी कुमार पाठक
वी 4/256 सी केशवपुरम, दिल्ली–35

****

☞ पृष्ठ 5 का शेष

ऐसे थे दयानन्द

देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीद कर भोजन बनाया जाए, दूसरे भोजन मलिन हो या उसमें कोई मलिन वस्तु गिर जाए। साध लोगों का मेहनत का पैसा है, उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है।

देश की भाषा हिन्दी– महर्षि दयानन्द देश की एकता के लिए आवश्यक समझते थे कि सारे देश की भाषा एक हिन्दी हो। इसलिए वे अपने ग्रन्थों का किसी दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद न करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी देशवासी उनके ग्रन्थों को हिन्दी में ही पढ़ें। वे मानते थे कि भारतवासियों को हिन्दी भाषा सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है। उनके ग्रन्थों का अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद के वे विरोधी न थे। सन् 1870 में मिर्जापुर में स्वामी जी ने एक बंगाली बनवारीलाल को अंग्रेजी सीखने के लिए और मैक्समूलर कृत वेदों का अंग्रेजी अनुवाद सुनने के लिए नौकर रखा था।

सन् 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सांयकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझको कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब वह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।

सन् 1881 में रायपुर में ठाकुर हरिसिंह स्वामी जी से मिलने आए। स्वामी जी ने ठाकुर साहब से पूछा कि आपके यहां राजमंत्री कौन है तो उन्होंने उत्तर दिया शेख इलाही बख्श हैं, परन्तु वे जोधपुर गए हैं। उनके पीछे उनके भतीजे करीम बख्श (जो वहाँ उपस्थित थे) सब काम देखते हैं। यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि आर्य पुरुषों को उचित है कि मुसलमानों को अपना राजमन्त्री, बनाएं, ये दासीपुत्र हैं। यह सुनकर करीम बख्श और अन्य 5–7 मुसलमान, जो वहाँ बैठे थे, क्रोध से भर गए।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है।

वेदों के संबंध में महर्षि लिखते हैं '' मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।'' महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकल ही हैं वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं–**बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।** अर्थात् वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं– **यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः।** अर्थात् जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं।

महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और मानते थे कि वेद पढ़ना–पढाना और सुनना–सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। ''भ्रान्ति निवारण'' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं– ''मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋवेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।

पण्डित महेन्द्रपाल आर्य (पूर्व नाम मौलवी महबूब अली) जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में एक बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का पढ़कर वे आर्य समाज में आ गये। वे कहते हैं ''मैं अज्ञानियों के टोले से निकल कर ज्ञानियों के टोले में आया हूँ। मुसलिम समाज अनपढ़ व अन्धविश्वासियों का समाज है। आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। बाकी जिन्दगी मैं पढ़े लिखे अन्धविश्वासमुक्त नेक लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ।''

सत्यार्थप्रकाश के सम्बध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार–''इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।''

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी– ''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।''

महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मनुष्य की परिभाषा में लिखते हैं– ''मनुष्य उसी को कहना कि विचारशील होकर अपनी तरह दूसरों के सुख–दुख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपनी पूरी ताकत से ..... अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सब प्रकार से किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही बड़ा दुख झेलना पड़े, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।''

महाराजा भर्तृहरि जी का एक श्लोक है–

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्,

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायात्पथः प्रविचलिन्त पदं न धीराः।

अर्थात् नीति को जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन आए या जाए, मृत्यु अभी आ जाए या चिरकाल के बाद आए, परन्तु धैर्यवान लोगों के पग न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते।

यह श्लोक महर्षि दयानन्द के जीवन पर पूरी तरह घटित होता है। सभी प्रकार के विघ्न–बाधाओं, खतरों और प्रलोभनों से टक्कर लेते हुए स्वामी जी सत्य और न्याय के प्रचार पर डटे रहे।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था– हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है।

महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमर में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा हैं। ''मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।''

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा
0172–4010679

आर्य समाज नोएडा द्वारा आर्यवीर बिस्मल के जन्मोत्सव पर समारोह

आर्यवीर क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद 'विस्मिल' के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज नोएडा के तत्त्वावधान में क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रभक्ति भरे गीतों का कार्यक्रम 'बिस्मिल सभागार' में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य डा.जयेन्द्र जी द्वारा संध्या वंदन एवं कैप्टन अशोक गुलाटी द्वारा 'बिस्मिल' की प्रसिद्ध रचना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएं' का पाठ किया गया। बरेली से पधारे श्री भानु प्रकाश शास्त्री, श्री योगेन्द्र शास्त्री व अनेक सहयोगियों द्वारा देशभक्तों को राष्ट्र भक्ति पूर्ण गीतों से याद किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तरप्रदेश के कैबीनेट मंत्री और सपा नेता नरेन्द्र सिंह भाटी थे। बतौर विशिष्ट अतिथि अपना उद्‌बोधन करते हुए चेतना मंच के संपादक आर.पी. राघुवंशी ने कहा कि हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। उन्होंने कहा कि आज के राजनीतिक हालत किसी से छुपे नही हैं। देश के लिए सोचने की किसी को फुरसत नहीं रह गई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनोहर लाल सर्राफ एंड सन्स की श्रीमती सुषमा सर्राफ ने की। धन्यवाद श्रीमती गायत्री मीना द्वारा किया गया।

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 17-18/07/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

मुख्यमंत्री पहुँचे गुरु नानक देव डी.ए.वी. स्कूल भिखीविंड

पंजाब के माननीय मुख्यमंत्री 'श्री प्रकाश सिंह जी बादल' गुरु नानक देव डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में श्री सरबजीत सिंह' की आत्मा की शांति के लिए रखे गए भोग पाठ में पधारे। इस अवसर पर स्कूल के चेयरमैन श्री इकबाल सिंह जी बेदी एवं प्रिंसीपल श्री संजीव कोचर ने स्कूल के विकास कार्यों की रिर्पोट उनके सामने पेश की। 'श्री प्रकाश सिंह जी बादल' ने स्कूल की कार्य प्रणाली को देखकर प्रशंसा करते हुए कहा कि डी.ए.वी. स्कूल, भिखीविंड ने गाँव के बच्चों को शिक्षा देने की जो जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है उसे वह पूरी तरह से निभा रहा है। मुख्य मंत्री ने भविष्य में और अच्छे काम करने के लिए प्रबन्धकों शुभकामनाएँ दीं।

इस अवसर पर 'विरसा सिंह जी वलटोहा' (एम.एल.ए. खेमकरण) ने विद्यालय की दिन रात तरक्की करने के लिए प्रशंसा की। इस मौके पर बच्चों ने **ओ३म् विश्वानि** मंत्र से सबका सम्मान किया। स्कूल के प्रांगण में मुख्यमंत्री महोदय के अतिरिक्त, श्री मति अम्बिका सोनी कैबीनेट मंत्री, भारत सरकार, श्री रत्न सिंह अजनाला, संसद सदस्य, डा. राजकुमार वेरका, एस. सी, एस.टी कमीशन, श्री विक्रमजीत सिंह मजीठिया–कैबीनेट मंत्री पंजाब, श्री चुनी लाल भगत–कैबीनेट मंत्री पंजाब, श्री आदर्श प्रताप कैरों–कैबीनेट मंत्री पंजाब, श्री ओम प्रकाश सोनी–एम. एल.ए. तथा अन्य सभी पार्टियों के नेता मौजूद थे। इस मौके पर अमृतसर के डी.सी. श्री रजत अग्रवाल, डीआईजी श्री उमरामंगल, आईजी श्री हुण्डल आदि भी मौजूद थे। सब ने स्कूल की प्रशंसा की।

डी.ए.वी. अशोक विहार ने मनाया 22वाँ स्थापना दिवस

महात्मा हंसराज की 149वीं जयंती के अवसर पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अशोक विहार फेज़ IV ने अपना स्थापना दिवस बड़ी धूम–धाम से मनाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में छात्रों के दादा–दादी, नाना नानी को आमंत्रित किया गया।

विद्यालय के अध्यक्ष डा.एन.के. ओबेरॉय ने अपने संबोधन में विद्यालय की स्थापना से जुड़ी यादों को ताजा करते हुए बताया कि किस प्रकार दृढ़संल्प एवं उद्देश्य के प्रति कटिबद्धता के बल पर निरंतर प्रगति करते हुए यह विद्यालय एक विशाल संस्थान के रूप में परिवर्तित हो गया।

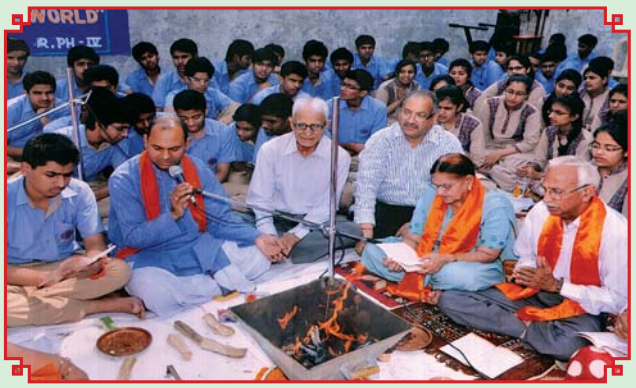

उपाध्यक्ष श्रीमति शशि प्रभा चाँदला, प्रबंधक श्री एस. एम गुप्ता तथा एल.एम.सी. के सदस्य श्री प्रवीन कुमार ने इस अवसर पर उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा विद्यालय के छात्रों को आर्शीवाद दिया। इस अवसर पर सभी उपस्थित जनों के लिए 'लंगर प्रसाद' की विशेष व्यवस्था की गई।

विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने विद्यालय के छात्र–छात्राओं के उत्साह एवं सेवा भाव की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि समय–समय पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण एवं उनमें जीवन मूल्यों की स्थापना में अत्यंत सहायक सिद्ध होगा।

आर्य युवा समाज नाहन द्वारा अन्न व वस्त्र वितरण

आर्य युवा समाज नाहन द्वारा प्रधानाचार्य श्री नरेश कटोच जी की अध्यक्षता में स्कूल के अध्यापक श्री अमित, नरदेव व सुरेश द्वारा नाहन शहर से 10 कि.मी दूर गाँव गणेश का बाग स्थान पर जाकर अत्यधिक गरीबी से जूझ रहे लोगों को वस्त्र व चावल प्रदान किए। यह कार्य गाँव के वार्ड मेम्बर श्री नवीन कुमार जी व भूतपूर्व पंचायत प्रधान श्री सीता राम जी की देखरेख में वहाँ

की आँगनबाड़ी में लोगों को एकत्रित कर किया गया। 17 परिवारों के 65 सदस्यों के लिए चावल व वस्त्रों का वितरण किया गया। लोगों ने आर्थिक सहायता ग्रहण कर, आर्य युवा समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। उपस्थित जनसमूह को आर्य समाज व उसके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई व हवन की महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**